Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरल प्राकृत व्याकरण

डॉ० राजाराम जैन
युनिवर्सिटी प्रोफे० (प्राकृत) एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर-संस्कृत-प्राकृत विभाग
ह० दा० जैन कॉलेज, आरा (बिहार)
(मगध विश्वविद्यालय)

प्राच्य भारती प्रकाशन
१९९०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरल प्राकृत व्याकरण

डॉ० राजाराम जैन
युनिवर्सिटी प्रोफे० (प्राकृत) एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर-संस्कृत-प्राकृत विभाग
ह० दा० जैन कॉलेज, आरा (बिहार)
(मगध विश्वविद्यालय)

प्राच्य भारती प्रकाशन
१९९०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकाशक :—
रत्नासागर M. Sc.
महाजन टोली नं २, आरा-८०२३०१
(बिहार)

संशोधित संस्करण
जनवरी, १९९०
मूल्य १५/- मात्र १४/—

मुद्रक :-
जनता प्रिंटिंग प्रेस, आरा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषयानुक्रम

भूमिका i—iii

पहला पाठ—वर्णमाला (१—२) १

दूसरा पाठ—प्राकृत-भाषा के सामान्य नियम (२—१३) २

तीसरा पाठ—सन्धियाँ, परिभाषा एवं भेद-प्रभेद-आदि (१३—२१) १३

चौथा पाठ—कृदन्त (२१ - २९)

१ वर्त्तमान कालिक कृदन्त, भेद-प्रभेद आदि २२

२ भूतकालिक कृदन्त २४

३ भविष्यत्, ४ सम्बन्ध सूचक भूत कृदन्त २६

५ हेत्वर्थक ६ विध्यर्थक कृदन्त २८

७ शीलधर्म (कर्तृ) वाचक कृदन्त २९

पाँचवाँ पाठ—तद्धित-प्रकरण (३०—३५) ३०

१ अपत्यार्थक ३०

२ तुलनात्मक ३ मत्वर्थीय ३१

४ भावात्मक ५ इदमार्थक ३२

६ सादृश्यार्थक ७ भवार्थक ८ आवृत्यार्थक ३३

९ कालार्थक १० परिमाणार्थक ११ विभक्त्यर्थ ३४

१२ स्वार्थिक ३५

छठवाँ पाठ—स्त्री-प्रत्यय, नियम आदि (३५—४०) ३५

सातवाँ पाठ—कारक एवं विभक्तियाँ, (४०—४६)

—कारक एवं विभक्ति में अन्तर तथा अन्य नियम ४१

—कारकों की संख्या तथा सोदाहरण परिभाषाएँ ४३

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खारवेल ने अपने लोक मंगलकारी सर्वोदयी आदर्श विचारों एवं आज्ञाओं का प्रचार-प्रसार प्राकृत-भाषा में किया।

प्राकृत के जनभाषाई रूप एवं लोकप्रियता के कारण संस्कृत के प्रायः सभी नाटककारों—शूद्रक, भास, कालिदास आदि ने भी अपने संस्कृत-नाटकों में उसे सम्मानित स्थान प्रदान किया।

प्राकृत के व्याकरण सम्बन्धी सिद्धान्तों की कुछ चर्चा प्राचीन आगम-ग्रन्थों में मिलती है। उनमें प्राकृत-व्याकरण के अनेक ग्रन्थों की चर्चा भी आई है। कहा जाता है कि प्राकृत-लक्षण (महर्षि पाणिनि), ऐन्द्र व्याकरण(इन्द्र), सद्द-पाहुड (अज्ञात) प्राकृत-व्याकरण (समन्तभद्र), स्वयम्भू-व्याकरण (स्वयम्भू) प्राकृत-साहित्य-रत्नाकर (अज्ञात) आदि में अपने-अपने ढंग से प्राकृत-व्याकरण सम्बन्धी नियम लिखे गए थे किन्तु आज वे ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। जो उपलब्ध हैं उनमें प्राकृत-लक्षण (चण्ड) प्राकृत-प्रकाश (वररुचि) प्राकृत-प्रकाश की मनोरमा टीका (भामह) प्राकृत-मंजरी (कात्यायन), प्राकृत संजीवनी (वसन्तराज), सुबोधिनी (सदानन्द), सिद्धहेमशब्दानुशासन (आचार्य हेमचन्द) प्राकृतानुशासन (पुरुषोत्तम), प्राकृतशब्दानुशासन (त्रिविक्रम) षड्भाषा-चन्द्रिका (लक्ष्मीधर) प्राकृतरूपावतार (सिंहराज) प्राकृतकल्पतरु (रामशर्मातर्कवागीश), प्राकृतकामधेनु (लंकेश्वर) प्राकृत-चन्द्रिका (शेषकृष्ण) प्राकृतानन्द (रघुनाथकवि) प्राकृत-दीपिका (चण्डीदेव शर्मा) प्राकृतकल्पलतिका (ऋषिकेश) आदि प्रमुख हैं। इनका प्रकाशन अधुनातम वैज्ञानिक पद्धति से हो चुका है तथा देश-विदेश के विश्व विद्यालयों में पाठ्य-ग्रन्थों के रूप में स्वीकृत हैं।

प्राकृत-वैयाकरणों ने स्थान एवं काल-भेद के कारण प्राकृतों के अर्धमागधी, मागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री, पैशाची,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूमिका

आचार्य रुद्रट कृत काव्यालंकार के सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य नमिसाधु ने 'प्राकृत, शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए लिखा है :—प्राक् पूर्वं कृतं प्राकृतम् (२/१२ टीका) अर्थात् 'पहले किया गया'। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि 'प्राकृत' वह भाषा है, जो, मानव-सृष्टि के प्रारम्भिक काल से व्याकरण आदि संस्कारों से रहित होने पर भी स्वाभाविक रूप से सामान्य जनता के विचारों के आदान-प्रदान का स्वाभाविक माध्यम रहती आई हो। इसी लिए 'प्राकृत' शब्द की व्युत्पत्ति में 'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम् "तथा" प्रकृतीनां साधारण जनानामिदं प्राकृतम्" कह कर जन-सामान्य की स्वाभाविक भाषा को 'प्राकृत' कहा गया।

प्राकृत की उक्त व्युत्पत्तियों तथा अन्य भाषा-वैज्ञानिक खोजों के आधार पर यह भी सिद्ध हो गया है कि वेदों में प्रयुक्त छान्दस्-भाषा से "लौकिक-संस्कृत" का विकास हुआ तथा वैदिक-कालीन ही प्राच्या या पूर्वदेशीया भाषा से जो 'भाषा' विकसित हुई, वह 'प्राकृत' कहलाई। इस दृष्टि से उक्त संस्कृत एवं प्राकृत भाषाओं के विकास का स्रोत एक ही है अर्थात् दोनों सगी बहनें हैं। दोनों में अन्तर केवल यही है कि छान्दस् से विकसित भाषा के रूप को चूँकि महर्षि पाणिनि ने व्याकरण के नियमों में बाँध दिया, अतः संस्कार हो जाने से वह संस्कृत कहलाई, जब कि प्राकृत का स्वाभाविक अर्थात् जनभाषा (प्राकृत) का ही रूप बना रहा, यद्यपि उसमें देश, काल एवं परिस्थितियों के कारण नाना प्रकार के परिवर्तन अवश्य होते रहे।

प्राकृत-भाषा जन-सामान्य की लोकप्रिय एवं स्वाभाविक बोल-चाल की भाषा होने के कारण ही बिहार के महान् सपूत लोकनायक महावीर, बुद्ध, सम्राट अशोक एवं कलिंग सम्राट

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खारवेल ने अपने लोक मंगलकारी सर्वोदयी आदर्श विचारों एवं आज्ञाओं का प्रचार-प्रसार प्राकृत-भाषा में किया।

प्राकृत के जनभाषाई रूप एवं लोकप्रियता के कारण संस्कृत के प्रायः सभी नाटककारों—शूद्रक, भास, कालिदास आदि ने भी अपने संस्कृत-नाटकों में उसे सम्मानित स्थान प्रदान किया।

प्राकृत के व्याकरण सम्बन्धी सिद्धान्तों की कुछ चर्चा प्राचीन आगम-ग्रन्थों में मिलती है। उनमें प्राकृत-व्याकरण के अनेक ग्रन्थों की चर्चा भी आई है। कहा जाता है कि प्राकृत-लक्षण (महर्षि पाणिनि), ऐन्द्र व्याकरण(इन्द्र), सद्द-पाहुड (अज्ञात) प्राकृत-व्याकरण (समन्तभद्र), स्वयम्भू-व्याकरण (स्वयम्भू) प्राकृत-साहित्य-रत्नाकर (अज्ञात) आदि में अपने-अपने ढंग से प्राकृत-व्याकरण सम्बन्धी नियम लिखे गए थे किन्तु आज वे ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। जो उपलब्ध हैं उनमें प्राकृत-लक्षण (चण्ड) प्राकृत-प्रकाश (वररुचि) प्राकृत-प्रकाश की मनोरमा टीका (भामह) प्राकृत-मंजरी (कात्यायन), प्राकृत संजीवनी (वसन्तराज), सुबोधिनी (सदानन्द), सिद्धहेमशब्दानुशासन (आचार्य हेमचन्द) प्राकृतानुशासन (पुरुषोत्तम), प्राकृतशब्दानुशासन (त्रिविक्रम) षड्भाषा-चन्द्रिका (लक्ष्मीधर) प्राकृतरूपावतार (सिंहराज) प्राकृतकल्पतरु (रामशर्मातर्कवागीश), प्राकृतकामधेनु (लंकेश्वर) प्राकृत-चन्द्रिका (शेषकृष्ण) प्राकृतानन्द (रघुनाथकवि) प्राकृत-दीपिका (चण्डीदेव शर्मा) प्राकृतकल्पलतिका (ऋषिकेश) आदि प्रमुख हैं। इनका प्रकाशन अधुनातम वैज्ञानिक पद्धति से हो चुका है तथा देश-विदेश के विश्व विद्यालयों में पाठ्य-ग्रन्थों के रूप में स्वीकृत हैं।

प्राकृत-वैयाकरणों ने स्थान एवं काल-भेद के कारण प्राकृतों के अर्धमागधी, मागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री, पैशाची,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाकारी, ढक्की, चाण्डाली, आभीरी एवं अपभ्रंश जैसे अनेक भेद किए हैं तथा भाषा-वैज्ञानिकों ने आधुनिक भारतीय-भाषाओं की उसे जननी कहा है। बिहार की मगही, मैथिली एवं भोजपुरी भाषाओं का भी इन्हीं प्राकृतों से जन्म माना गया है।

जर्मन, अंग्रेजी, गुजरातीं एवं हिन्दी में भी आधुनिक शैली में प्राकृत-व्याकरण के अनेक ग्रन्थ लिखें गए हैं किन्तु विषय की गम्भीरता, नियमों की बहुलता, ग्रन्थों की विशालता एवं उनकी कीमतों की अधिकता के कारण प्रारम्भिक कक्षाओं के छात्र-छात्राओं तथा सामान्य जिज्ञासु पाठकों की पहुँच से दूर होने के कारण वे केवल विद्वद्भोग्य ही बन सके, सर्वभोग्य नहीं बन पाए। इस कारण प्रारम्भिक छात्रों के सम्मुख बड़ी कठिनाईयाँ आती रही हैं। इसीलिए उस रिक्तता की पूर्ति हेतु अपने सहयोगी प्राध्यापकों एवं साहित्य-प्रेमी बन्धुओं की प्रेरणा से प्रस्तुत लघु-पुस्तिका को तैयार किया गया है। इसमें प्राकृत के प्रारम्भिक छात्रों को ध्यान में रखकर ही केवल प्रारम्भिक, उपयोगी तथा आवश्यक विषयों तथा नियमों पर प्रकाश डाला गया है।

विश्वास हैं कि यह प्रयास प्राकृत के जिज्ञासुओं के ज्ञान-संवर्द्धन में सहायक होगा। इसे कम समय में तैयार करना पड़ा है और स्थानीय प्रेस में ही मुद्रित कराया गया है। सावधानी बरतने पर भी उसमें अनेक त्रुटियों और अशुद्धियों की सम्भावना है। इनके लिए मैं सादर क्षमायाचना करते हुए विद्वान् पाठकों से उनकी सूचना एवं सुझाव आमन्त्रित करता हूँ, जिससे कि अगले संस्करण में उनका सदुपयोग किया जा सके।

दिनांक २१-१-१९९०
महाजन टोली नं० २, आरा
(बिहार)

—राजाराम जैन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पहला पाठ

वर्णमाला (Alphabet)

किसी भी भाषा की मूल-ध्वनियों तथा उनकी आकृतियों या चिन्हों को वर्ण कहते हैं और किसी भी शब्द-गठन या पद-संरचना के लिए ये वर्ण-चिन्ह अनिवार्य माने गए हैं। इन वर्णों को दो भागों में विभाजित किया गया है।

क. स्वर-वर्ण—

इसके अन्तर्गत वे वर्ण आते हैं, जिनके उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता की अपेक्षा नहीं होती। प्राकृत-व्याकरण के अनुसार प्राकृत के स्वर-वर्ण निम्न प्रकार हैं :—

(१) ह्रस्व-स्वर—अ. इ. उ.
(२) दीर्घ स्वर आ. ई. ऊ. ए. ओ.

ध्यातव्य—

प्राकृत भाषा में ऋ, ऐ, औ एवं अः स्वर-वर्ण नहीं पाए जाते।

ख. व्यञ्जन-वर्ण —

प्राकृत-व्याकरण के नियमानुसार व्यञ्जन वर्ण वे हैं, जिनके उच्चारण में स्वर-वर्णों की सहायता अपेक्षित हो। ये व्यञ्जन-वर्ण निम्न प्रकार हैं :

क-वर्ग—क्. ख्. ग्. घ्. (कण्ठ्य)
च-वर्ग—च्. छ्. ज्. झ्. (तालव्य)
ट-वर्ग—ट्. ठ्. ड्. ढ्. ण्. (मूर्धन्य)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त-वर्ग—त्. थ्. द्. ध्. न्. (दन्त्य)
प-वर्ग—प्. फ्. ब्. भ्. म्. (ओष्ठ्य)
य्. र्. ल्. व्. (अन्तस्थ)
स्, ह्, (ऊष्म)
ँ (अनुनासिक) एवं ं (अनुस्वार)

ध्यातव्य—

(अ) प्राकृत भाषा में विसर्ग (:) नहीं होता। उसके स्थान में "ओ" स्वर हो जाता है। जैसे—
रामः—रामो। सः—सो।

(आ) सामान्य प्राकृत में 'ङ' एवं 'ञ का प्रयोग नहीं होता। उनके स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग होता है। जैसे—
अङ्क—अंक, । पञ्च—पंच।

(इ) शौरसेनी एवं मागधी-प्राकृत को छोड़कर सर्वत्र श्, ष् एवं स् के स्थान में 'स्' का प्रयोग होता है। जैसे—
विशेषः—विसेसो; हरिवंशः—हरिवंसो;
एषणा—एसणा, आदि।

दूसरा पाठ

प्राकृत-भाषा के सामान्य नियम

ध्वनि-परिवर्तन (वर्ण-विकार) के सामान्य नियम

प्राकृत व्याकरण के अनुसार इसे दो भागों में विभाजित किया जाता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१. स्वर-ध्वनि-परिवर्तन—

(१) आचार्य हेमचन्द्र द्वारा लिखित प्राकृत -व्याकरण के नियमानुसार प्राकृत-भाषा में ऋ, ऐ, औ, तथा अः को छोड़ कर शेष स्वर वही होते हैं, जो कि संस्कृत में। प्राकृत-भाषा में ऋ के स्थान पर रि, अ, इ तथा उ वर्णों का प्रयोग होता है। जैसे—

ऋ = रि — ऋषिः = रिसि,
,, = अ — मृतः = मओ, मियो
,, = इ — मृग = मियो, मिओ, मओ
,, = उ — ऋतुः = उउ,
ऐ = अइ — कैलाशः = कइलासो,
,, = ए — ,, = केलासो
औ = अउ — रौरवः = रउरवो,
,, ,, — गौरवः = गउरवो
,, ,, — कौरवः = कउरवो
,, ओ — यौवनम् = जोव्वणं,

(२) कहीं-कहीं शब्द के प्रारम्भ में ह्रस्व 'अ' का लोप हो जाता है। जैसे —

अरण्यम् = रण्णं। इदानीम् = दाणिं

(३) ह्रस्व-स्वर, दीर्घ-स्वरों में बदल जाता है। जैसे—

दुश्शासनः = दूसासणो। पश्यति = पस्सइ
अश्वः = आसो। वर्षः = वासो
सिंहः = सीहो। प्रकटः = पायडो
विश्रामः = वीसामो.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४) दीर्घ-स्वर, ह्रस्व-स्वर में बदल जाता है। जैसे –

चूर्णः = चुण्णो। पतिगृहं = पईहरं
आम्रं = अम्बं। नीलोत्पलम् = नीलुप्पलं

२. **व्यञ्जन-परिवर्तन** –

प्राकृत-भाषा में शब्द के प्रारम्भ में आने वाले न, य, श और ष को छोड़कर अन्य सभी व्यञ्जनों में सामान्यतया कोई परिवर्तन नहीं होता। उक्त 'न' आदि चार व्यञ्जनों में निम्न प्रकार परिवर्तन हो जाता है। यथा :–

न=ण — नगरं = णयरं। नदी = णइ
,,=,, — नरः = णरो। यमुना =जउँणा
य=ज — यशः = जशो। यतिः = जई
श=स — शब्दः = सद्दो। श्यामा = सामा
ष=स — षड्जः = सज्जो। षण्ढः = संढो

(१) शब्द के मध्य अथवा अन्तमें रहने वाले स्वर से परे तथा अन्य किसी व्यञ्जन से संयोग रहित क्. ग्. च्. ज्. त्. द्, प्. य, व्, का प्रायः लोप हो जाता है, किन्तु, उनके स्वर शेष बचे रह जाते हैं तथा लुप्त व्यञ्जन के अवशिष्ट 'अ' स्वर के स्थान पर कहीं-कहीं य-श्रुति होती है। जैसे :—

क—सुखकरः =सुहयरो—सुहअरो।
, सकलः =सयलो—सअलो
ग—नगरम् =णयरं—णअरं।
,, सागरः =सायरो—साअरो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च—सहचरः = सहयरो, सहअरो।
,, वाचणा = वायणा, वाअणा
,, वचनं = वयणं, वअणं
ज—पूजा = पूया, पूआ।
,, भुजा = भुया, भुआ। राजा—रायो, राओ।
त—पिता = पिया, पिआ।
,, माता = माया, माआ
द—भेदः = भेयो, भेओ।
कदम्बः = कयंबो, कअंबो। मदनः—मयणो, मअणो
प—रिपुः = रिऊ। विपुलम्—विऊलं,
यै—प्रयोजनम् = पयोयणं, पओअणं। वायु—वाऊ,
व—प्रावृषः = पाउसो (वर्षाऋतु)।
दिवसः = दियहो, दिअहो

अपवाद—

यहाँ 'प्राय': शब्द वैकल्पिक हैं अर्थात् कहीं-कहीं लोप नहीं होता। जैसे :—

सुकुसुमं = सुकुसुमं; पियगमणं = पियगमणं;
सचावं = सचावं, विजणं = विजणं,
अतुलं = अतुलं, आदरो = आदरो आदि।

इसी प्रकार संगमो, अक्को, कालो, आदि में भी उक्त नियम लागू नहीं होता।

(२) आ एवं उ स्वरों के बाद आने वाले 'प, का 'व' हो जाता है। जैसे—

पापं = पावं। उपायः = उवायो।
उपहासः = उवहासो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३) प्राकृत-भाषा में स्वर से परे असंयुक्त तथा अनादि अर्थात् शब्दों के मध्य अथवा अन्त में आने वाले ख्, घ्, थ्, फ्, एवं भ् के स्थान में 'ह्' हो जाता है। जैसे—

ख्—नखम् = णहं। मुखम् = मुहं।
सखी = सही। विशाखा = विसाहा।
लेखः = लेहो। मेखला = मेहलो
घ्—मेघः = मेहो। लघुः = लहू
थ्—तथा = तहा। यथा = जहा
नाथः = णाहो। कथा = कहा
ध्—वधिरः = बहिरो। साधुः = साहू
मधु = महु। मगधं = मगहं
भ्—प्रभा = पहा। सभा = सहा।
आभरणम् = आहरणं।

अपवाद—

निम्नलिखित शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता—संखो (शंखः), संघो (संघ,) कंथा (कन्था) गज्जंतो (गर्ज्जयन्) अधीरो (अधीरः) अधण्णो(अधन्यः) आदि.

(४) स्वर से परे असंयुक्त एवं अनादि ट्, ठ्, ड्, न् एवं ब् के स्थान में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं। जैसे :-

ट् = ड—भटः = भडो (योद्धा, लड़ाकू)। घटः = घडो
ठ् = ढ—कमठः = कमढो। पठति = पढइ
ड् = ल—गरुडः = गरुलो। तडागः = तलागो
न् = ण—वदनम् = वयणं। वनम् = वणं।
नगरम् = णयरं
ब् = व—सबलः = सवलो। निर्बलः = निव्वलो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपवाद—

यह नियम निम्न शब्दों पर लागू नहीं होता—घंटा, वैकुंठो (वैकुण्ठः), मोंडं (मुण्डम्) खट्टा, चिट्ठइ, ठाइ (स्थायी), अटइ (अटति),

(५) मध्य अथवा अन्त्यवर्ती 'श' एवं 'ष' के स्थान में 'स' हो जाता है। जैसे—

विशेषः = विसेसो। देशः = देसो

कषायः = कसाओ। पुरुषः = पुरिसो

३. **संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तन :**

प्राकृत-भाषा में विजातीय संयुक्त-व्यंजनों के स्थान में सजातीय संयुक्त-व्यञ्जन हो जाता है।

(क) विजातीय संयुक्त-व्यंजन—

वह कहलाता है, जिसमें भिन्न-भिन्न वर्गों के विविध वर्णों के मेल से शब्द बनता है। जैसे :—

कष्ट, विद्या, कक्षा, पात्र। यहाँ कष्ट में 'ष्'—ऊष्म वर्ण है एवं 'ट' टवर्ग का वर्ण है। विद्या में 'द्'—तवर्ग का है एवं 'य' अन्तस्थ वर्ण का है। कक्षा (क्+ष्+आ=क्षा) में 'क'—कवर्ग का एवं'ष' —ऊष्म वर्ण का है। पात्र में 'त्र'—तवर्ग का एवं 'र'—अन्तस्थ वर्ण का है।

(ख) सजातीय संयुक्त-व्यंजनः-

वह है, जिसमें एक ही वर्ग के वर्णों के मिलने से शब्द अथवा पद का गठन हो। यहाँ विशेष स्पष्टीकरण हेतु विजातीय एवं संयुक्त व्यंजनों के तुलनात्मक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं :—

विजातीय रूप—		सजातीय रूप
विद्या—(द्+य्+आ)	—	विज्जा।
अवद्यम् (द्=य्+अ)	—	अवज्जं।
कष्टः—(ष्+ट्)	—	कट्ठो
नष्टः—(ष्+ट्)	—	नट्ठो
कक्षा—(क्+ष्+आ=क्षा)		कक्खा
पात्रः—(त्+र्+अ)	—	पत्तो
छात्रः—(त्+र्+अ)	—	छत्तो
अद्यः—(द्+य्)	—	अज्जो

(१) संज्ञा की प्रतीति कराने वाले शब्दों में 'ष्क', 'स्क' एवं 'क्ष' के स्थान में 'ख' हो जाता है। जैसे—

पुष्करम्—पोखरं अथवा पोक्खरं (तालाब)
निष्कम्—निक्ख (प्राचीन सिक्का)
स्कन्धः—खंधो (कन्धा)
स्कन्धावारः—खंधावारो। क्षत्रियः—खत्तिओ

(२) 'श्च', 'त्स' एवं 'प्स' के स्थान में 'च्छ' हो जाता है। जैसे :—

आश्चर्यम्=अच्छरियं, अच्छेरं।
उत्साहः=उच्छाहो।
अप्सरा=अच्छरा। लिप्सति=लिच्छइ।

(३) 'ष्ट' के स्थान में 'ठ' हो जाता है। जैसे—

अष्टम=अट्ठ। कष्टं=कट्ठं।
नष्टः=नट्ठो। यष्टिः=लट्ठी।
इष्टः=इट्ठो। पुष्टः=पुट्ठो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४) समस्त एवं स्तम्भ शब्दों को छोड़कर अन्य शब्दों के 'स्त' के स्थान में 'त्थ' अथवा 'च्छ' हो जाता है। जैसे-

प्रशस्तः = पसत्थो। प्रस्तरः—पत्थरो (पत्थर)
मत्सरः = मच्छरो। वत्सः = वच्छो
हस्तः = हत्थो। स्तोत्रम् = थोत्तं।

(५) 'ष्प', 'स्प' के स्थान में 'प्फ' अथवा 'फ' हो जाता हैं। जैसे :—

पुष्पम् = पुप्फं। स्पर्शः = फंसो। स्पंदनं = फंदणं

(६) 'थ्य' के स्थान में 'च्छ' हो जाता है। जैसे :—

पथ्यम् = पच्छं। मिथ्या = मिच्छा।

(७) 'ज्ञ' के स्थान में 'ण्ण' अथवा ण हो जाता है। जैसे—

प्रज्ञा = पण्णा। सर्वज्ञः = सव्वण्णू संज्ञा = सण्णा।
आज्ञा = आणा। ज्ञानम् = णाणं। विज्ञानम् = विण्णाणं।

(८) 'ध्य' के स्थान में 'झ'। यथा—

ध्यानम् = झाणं। उपाध्यायः = उवज्झाओ.
मध्यम् = मज्झं। विन्ध्यः = विंज्झो.

(९) 'म्न' के स्थान में 'ण्ण'। यथा—

प्रद्युम्नः = पज्जुण्णो। निम्नम् = निण्णं.

(१०) 'क्ष' के स्थान में 'ख', क्ख 'छ' एवं 'झ' होते हैं। जैसे :-

क्षयः = खओ। लक्षणम् = लक्खणं
क्षमा = खमा। क्षीणम् = खीणं, झीणं
क्षुधा = छुहा, खुहा.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(११) संयुक्त 'य्य', 'र्य', 'ज्य' के स्थान में 'ज्ज' होता है। जैसेः—

शय्या=सेज्जा। कार्यम्=कज्जं
पर्यन्तम्=पज्जंतं। आर्या=अज्जा
भार्या=भज्जा। मद्यम्=मज्जं।
विद्या=विज्जा। उद्यानम्=उज्जाणं

(१२) 'ष्ण', 'ष्ण', 'स्न', 'ह्न', 'ह्ण' 'क्ष्ण'के स्थान में 'ण्ह' हो जाता है जैसे :—

प्रश्नः=पण्हो। कृष्णः=कण्हो। उष्णः=उण्हो
स्नानम्=ण्हाणं। ज्योत्स्ना=जोण्हा।
वह्निः=वण्ही। स्नायुः=ण्हाऊ।
पूर्वाह्णम्=पुव्वण्हो। अपराह्णः=अवरण्हो।
तीक्ष्णम्=तिण्हं।

(१३) 'र्ष' के स्थान में 'ह' होता है। जैसे :—

कार्षापणः=काहावणो

(१४) 'त्म' के स्थान में 'प्प' हो जाता है। जैसे :—

आत्मा=अप्पा

(१५) 'ह्र', 'र्श', 'र्ष', 'र्य' की रेफ के स्थान में 'रि' हो जाता है। जैसे :—

गर्हा=गरिहा। आदर्शः=आयरिसो
दर्शनम्=दरिसणं। वर्षम्=वरिसं
आचार्यः=आयरिओ। सूर्यः=सूरिओ

अन्य आवश्यक नियम

(१६) प्राकृत-भाषा में हलन्त शब्द का प्रयोग नहीं होता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैसे :—संयुक्त 'न्म' के स्थान में 'म्म'। यथा—
जन्मः=जम्मो। मन्मथः=मम्महो।

(१७) संयुक्त श्म, ष्म, स्म एवं ह्म के स्थान में 'म्ह'। यथा—
काश्मीरः=कम्हारो। ग्रीष्मः=गिम्हो।
अस्माद्दशः=अम्हारिसो।
ब्रह्मा=बम्हा। ब्राह्मणः=बम्हणो।

(१८) शील (स्वभाव, आदत) धर्म (गुण) एवं साधु (निपुण) अर्थ में जो प्रत्यय आते हैं, उनके स्थान में 'इर' आदेश होता है।

हसणशीलः=हसिरो। लज्जाशीलः=लज्जिरो।
भ्रमणशीलः=भमिरो।

(१९) 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान में तुम्, अत्, तूण' एवं तुआण आदेश होते हैं। यथा—

क्त्वा=तुम्—दग्ध्वा—दड्ढुं। मुक्त्वा=मोत्तुं
क्त्वा=अत्—भ्रमित्वा—भमिअ।
क्त्वा=तूण—ग्रहीत्वा—घेत्तूण। कृत्वा—काऊण
क्त्वा=तुआण—भुक्त्वा—भोत्तुआण।

(२०) मतुप् प्रत्यय के स्थान में आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वंत, मंत एवं इत्त आदेश होते हैं। यथा :—

ईर्ष्यावान्=ईसालु। निद्रावान्=णिद्दालु
शोभावान्=सोहिल्लो।
विकारवान्=विआरिल्लो।
विकारवान्=विआरुल्लो।
रसवान्=रसालो। ज्योत्स्नावान्=जोण्हालो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धनवान्=धणवंतो।
पुण्यवान्=पुण्णवंतो। मानवान्=माणवंतो·
धर्मन्=धम्मं। नष्टम्=णट्ठं। दीपम्=दीवं

(२१) प्राकृत-भाषा में शब्द के प्रारम्भ में प्रायः संयुक्त व्यंजनों के प्रयोग नहीं मिलते। जैसे :—

स्वभावः=सहावो। स्नेहः=णेहो। न्यायः=णायो
ग्रामः=गामो। दारं=वारं, दारं। स्वरः=सरो

(२२) **स्वर-भक्ति**—व्यंजन को किसी स्वर से विभाजित करके जब उसे स्वरयुक्त व्यंजन बना दिया जाय: तब इस प्रक्रिया को स्वर-भक्ति कहते हैं। जैसे :—

क्रिया=किरिया। वर्षः=वरिसो।
हर्षः=हरिसो। स्नेहः=सिणेहो।
आचार्यः=आयरियो। श्लोकः=सिलोओ।

(२३) प्राकृत-भाषा में द्विवचन का प्रयोग नहीं होता। केवल एक वचन एवं बहु वचन का ही प्रयोग किया जाता। द्विवचन को बहु वचन के अन्तर्गत ही मान लिया गया है।

(२४) प्राकृत-व्याकरण के नियमानुसार प्राकृत-भाषा में केवल छह विभक्तियाँ ही होती हैं। क्योंकि उसमें चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्ति एक समान होती है। अतः उन्हें इस प्रकार बताया गया है—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी एवं षष्ठी, पंचमी एवं सप्तमी।

(२५) प्राकृत में लिंग तीन प्रकार के पाए जाते हैं।
(क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) नपुंसक-लिंग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरलीकरण की प्रवृति के कारण नपुंसक-लिंग की संज्ञाएँ प्रायः पुल्लिग अथवा स्त्रीलिंग में मिश्रित मिलती हैं। पुल्लिंग-संज्ञाएँ अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त मिलती हैं तथा स्त्रीलिंग की संज्ञाएँ अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त एवं ऊकारान्त मिलती हैं।

तीसरा पाठ

सन्धियाँ

सन्धि एवं संयोग की परिभाषा :—

दो वर्णों के मेल से उत्पन्न होने वाले वर्ण-विकार को सन्धि कहते हैं तथा दो वर्णों के बिना विकृति के ही मिल जाने को संयोग कहते हैं।

प्राकृत में सन्धि की व्यवस्था वैकल्पिक मिलती है, नित्य नहीं। जैसे—दधीश्वरः शब्द की सन्धि होकर दहीसरो रूप भी मिलता है तथा दहि-ईसरो भी।

सन्धि-भेद :—प्राकृत-व्याकरण के अनुसार सन्धियाँ तीन प्रकार की हैं :—१. स्वर-सन्धि २. व्यंजन-सन्धि, एवं ३. अव्यय-सन्धि

विशेष :—प्राकृत में विसर्ग का प्रयोग नहीं होता। अतः उसमें विसर्ग सन्धि नहीं होती।

(१) **स्वर-सन्धि** :—दो अत्यन्त निकट स्वरों के मिलने से ध्वनि में जो वर्ण-विकार उत्पन्न होता है, उसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वर-सन्धि कहते हैं। इसे अच्-सन्धि अथवा सवर्ण स्वर-सन्धि भी कहते हैं। इस सन्धि के ४ भेद हैं :—

(i) दीर्घ-स्वर-सन्धि :—

उसे कहते हैं, जिसमें ह्रस्व या दीर्घ अ. इ और उ स्वर से यदि उनका स्व-सवर्ण-स्वर परे (अर्थात् बाद में) रहे, तो दोनों के स्थानमें विकल्प से सवर्ण-दीर्घ होता है। जैसे :—

(क) अ + अ = आ णर + अहिवा = णराहिवा, णर-अहिवा, (नराधिपः)

दंड + अहीसो = दंडाहीसो, दंड = अहीसो, (दण्डाधीशः)

अ + आ = आ ण + आगओ = णागओ,

ण-आगओ—(नागतः) ण + आलवइ = णालवइ, ण—आलवइ (नालपति)

आ + अ = आ—रमा + अहीणो = रमाहीणो, रमा अहीणो (रमाधीनः)

आ + आ = आ—रमा + आरामो = रमारामो, रमा—आरामो

(ख) इ + इ = ई मुणि + इणो = मुणीणो, मुणि-इणो (मुनीनः)

इ + ई = ई मुणि + ईसरो = मुणीसरो, मुणि—ईसरो (मुनीश्वरः)

ई + इ = ई—गामणी + इइहासो = गामणीइहासो, गामणी इइहासो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ई+ई पुहवी+ईसो=पुहवीसो, पुहवो ईसो
(पृथिवीशः)

उ+उ=ऊ—भाणु+उवज्झाओ=
भाणूवज्झाओ, भाणु उवज्झाओ(भानूपाध्यायः)

उ+ऊ=ऊ—साहु+ऊसवो=साहूसवो
(साधूत्सवः) साहु ऊसवो

ऊ+उ=ऊ—वहू+उअरं=वहूअरं, वहू उअरं
(वधूदरं)

ऊ+ऊ=ऊ—कणेरू +ऊसिअं=कणेरूसिअं,
कणेरू ऊसिअं

(ii) **गुण-स्वर-सन्धि :—**

इस सन्धि को असवर्ण स्वर-सन्धि भी कहते हैं। इसमें अ और आ के बाद असवर्ण ह्रस्व अथवा दीर्घ ई और ऊ हो, तो दोनों के स्थान में क्रमशः ए और ओ गुणादेश हो जाता है। यह नियम वैकल्पिक है अर्थात् कहीं गुणादेश होता है और कहीं-कहीं नहीं भी होता है। जैसे :—

(क) अ+इ=ए—वास+इसी=वासेसी, वासइसी
(व्यासऋषि)

आ+इ=ए—रामा+इयरो=रामेअरो, रामा इअरो
(रामेतरः)

अ+ई=ए—दिण+ईसो=दिणेसो, दिण ईसो
(दिनेशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ + ई = ए—जाया + ईसो = जायेसो, जायाईसो
(जायेशः)

अ + उ = ओ—गूढ + उअरं = गूढोअरं, गूढ उअरं
(गूढोदरम्)

आ + उ = ओ—रमा + उवचिअं = रमोवचिअं,
रमा-उवचिअं

अ + ऊ = ओ—सास + ऊसासा = सासोसासा,
सास—ऊसासा (श्वासोच्छ्वासा)

आ + ऊ = ओ—विज्जुला + ऊसुंभिअं =
विज्जुलोसुंभिअं, विज्जुला-ऊसुंभिअं

इसी प्रकार :—

अ + ए = ए ण + एव = णएव (नैव)
आ + ए = ए तहा + एव = तहेव (तथैव)
अ + ओ = ओ जल + ओहो = जलोहो (जलौघः)
आ + ओ = ओ पहा + ओलि = पहोलि (प्रभावलीः)

(iii) **ह्रस्व-दीर्घ स्वर-सन्धि :—**

प्राकृत-व्याकरण के नियमानुसार प्राकृत के सामासिक पदों में विकल्प से ह्रस्व-स्वरों का दीर्घ एवं दीर्घ स्वरों का ह्रस्व हो जाता है। जैसे :—

(क) ह्रस्व-स्वर का दीर्घ—अंत + वेई = अंतावेई, अंतवेई-
सत्त + वीसा = सत्तावीसा; सत्तवीसा.

पइ + हरं = पईहरं; पइहरं.

(ख) दीर्घ-स्वर का ह्रस्व—मणा + सिला = मणसिला;
मणासिला.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णई + सोत्तं = णइसोत्तं; णईसोत्तं.
गोरी + हरं = गोरिहरं; गोरीहरं.
जऊँडा + यडं = जऊँणयडं; जउँणायडं.

(iv) **प्रकृतिभाव अथवा सन्धि-निषेध स्वर-सन्धि :—**

सन्धि का निषेध होना अर्थात् सन्धि का नहीं होना ही प्रकृतिभाव कहलाता है। इसमें दो स्वरों का मेल नहीं होता। यह प्रकृतिभाव संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। उदाहरणार्थ :—

(क) इ एवं उ की विजातीय-स्वर के साथ सन्धि नहीं होती। जैसे :—

इ + अ = पहावलि + अरुणो = पहावलि अरुणो.
वि + अ = विअ। जाइ + अंधो = जाइ अंधो
उ + अ — बहु + अवऊढो = बहु-अवऊढो

(ख) ए और ओ के आगे यदि कोई स्वर-वर्ण हो तो उनमें सन्धि नहीं होती। जैसे :—

ए + अ — वणे + अडइ = वणे अडइ.
ओ + आ — रुक्खादो + आअओ = रुक्खादो आअओ.
ओ + ए — एओ + एत्थ = एओ-एत्थ.
ओ + अ — अहो + अच्छरिअं = अहो अच्छरिअं

(ग) उद्वृत्त स्वर की किसी भी स्वर के साथ सन्धि नहीं होती। जैसे :—

निसा + अरो = निसाअरो (निशाचरः)
गंध + उडि = गंधउडि (गन्धकुटिम्)
रयणी + अरो = रयणीअरो (रजनीकरः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(घ) स्वर-वर्ण के परे रहने पर उसके पहले के स्वर का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे :—

राअ + उलं = राउलं राअउलं (राजकुलम्),
नीसास + ऊसासा = नीसासूसासा, नीसासऊसासा.
नर + इंदो = नरिंदो, नरइंदो (नरेन्द्रः).
महा + इंदो = महिंदो, महाइंदो

उक्त उदाहरणों में सर्वत्र विजातीय स्वरों में पारस्परिक सन्धि न होने से प्रकृति-भाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है, किन्तु कहीं-कहीं अपवाद भी पाए जाते हैं और सन्धि के वैकल्पिक अथवा नित्य रूप भी मिलते हैं। जैसे :—

(क) **वैकल्पिक सन्धि :—**

अ + आ = कुंभ + आरो = कुंभारो; कुंभआरो.
लोह + आरो = लोहारो; लोहआरो.
अ + ई = तियस + ईसो = तियसीसो; तियसईसो.
उ + उ = सु + उरिसो = सूरिसो; सुउरिसो.

(ख) **नित्य सन्धि :—**

अ + आ = चक्क + आओ = चक्काओ (चक्रवाकः).
साल + आहणो = सालाहणो।

(२) **व्यञ्जन-सन्धि :—**

व्यञ्जन-वर्ण के साथ व्यञ्जन अथवा स्वर के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं। जैसे धनं + एव धणमेव। किन्तु प्राकृत के वैयाकरणों ने व्यञ्जन-सन्धि का विशेष विचार नहीं किया। क्योंकि प्राकृत में प्रायः व्यञ्जनों में सन्धि नहीं होती।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यञ्जनों का लोप होने पर जो स्वर शेष रह जाते हैं, उनमें स्वर-सन्धि के समान ही सन्धि-कार्य होता है। फिर भी, उसके कुछ नियम इस प्रकार बतलाए गए हैं :—

(क) ह्रस्व 'अ' के बाद आए हुए विसर्ग के स्थान में उस पूर्व के 'अ' के साथ 'ओ' हो जाता है। जैसे :—

अग्रतः=अग्गओ। पुरतः=पुरओ। भवतः=भवओ।

(ख) शब्द या पद के अन्त में रहने वाले 'म' के स्थान में अनुस्वार हो जाता है। जैसे :—

देवम्=देवं। गिरिम्=गिरिं।

(ग) 'म' के बाद में आने वाले स्वर के रहने पर उस 'म' के स्थान पर विकल्प से अनुस्वार हो जाता है। जैसे:—

यम्+आहु=यमाहु, यं आहु;
धनम्+एव=धणमेव; धणं एव

(घ) जहाँ आदि-स्वर वाले दो पद एक साथ आवें, वहाँ उन दोनों पदों के मध्य में विकल्प से 'म्' हो जाता है। जैसे:—

एक्क+एक्क=एक्कमेक्कं; एक्केक्कं।
एक्क+एक्केण=एक्कमेक्केण; एक्केक्केण।

(च) शब्द या पद के बीच में आने वाले ङ्, ञ्, ण्, एवं न् के स्थान में अनुस्वार हो जाता है। जैसे :—

पराङ्मुखः=परंमुहो। कञ्चुकः=कंचुओ।
षण्मुखः=छंमुहो। आरम्भः=आरंभो।

अपवाद :—

कहीं कहीं अन्त्यवर्ती व्यञ्जन का लोप न होकर परवर्त्ती

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वर के साथ उसकी सन्धि हो जाती है। जैसे :—

किम् + इहं = किमिहं। पुनर् + अपि = पुणरवि।

(छ) प्राकृत-व्याकरण के नियमानुसार प्रायः अनुस्वार का लोप भी हो जाता है। जैसे :—

संस्कारः = सक्कारो। संस्कृतं = सक्कयं।

विंसति = वीसा। त्रिंशत् = तीसा।

(ज) कहीं कहीं प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ण पर अनुस्वार का आगम हो जाता है। जैसे :—

वक्रम् = बंकं। दर्शनम् = दंसणं।

इह = इहं। मनस्वी = मणंसी।

उपरि = उवरिं। सम्मुखम = सम्मुहं।

(झ) क्त्वा प्रत्यय के प्राकृत के तूण, तुआण, ऊण एवं उआण के 'ण' पर अनुस्वार हो जाता है। जैसे :—

काउण = काऊणं। काउआण = काउआणं।

इसी प्रकार तृतीया एकवचन, षष्ठी बहुवचन के 'ण' पर तथा सप्तमी बहुवचन के 'सु' पर भी अनुस्वार हो जाता है। जैसे :—

तेण = तेणं। कालेण = कालेणं।

वच्छेसु = वच्छेसुं।

(३) **अव्यय सन्धि :** –

अव्यय-पदों में परस्पर में सन्धि हो जाने को अव्यय-सन्धि कहते हैं। यद्यपि यह सन्धि भी स्वर-सन्धि के अन्तर्गत आती है तथापि अव्यय-सन्धि के विषय में कुछ विशेष विचार करने की दृष्टि से यहाँ कुछ नियमों का विवेचन किया जा रहा है :—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(अ) पूर्व-पद के बाद आए हुए स्वर का विकल्प से लोप हो जाता है तथा 'प' के स्थान में 'व' हो जाता है। जैसे :-

केन + अपि = केणवि; केणावि.
को + अपि = कोवि; को अवि.
तम् + अपि = तंवि; तमवि.
किम् + अपि = किंवि; किमवि.

(आ) अन्तिम पद के आद्य 'इ' का विकल्प से लोप तथा पद के अन्त के 'त' का द्वित्व हो जाता है। जैसे :—

दीसइ + इति = दीसइत्ति; दीसइ इति.
तहा + इति = तहत्ति, तहा इति.
जइ + इमा = जइमा; जइ इमा.

(इ) यदि 'इति' शब्द अव्यय-पद के प्रारम्भ में आवे तो उसके स्थान में 'इअ' होगा। जैसे :—

इति विन्ध्यगुफामध्ये = इअ विज्झगुहामज्झे

(ई) यदि अनुस्वार के बाद 'इव' का प्रयोग हो तो उसके स्थान में 'व' हो जाता है। जैसे—गेहं + इव = गेहं व.

(उ) यदि स्वर के बाद 'इव' का प्रयोग हो तब उसके स्थान में 'व्व' हो जाता है। जैसे—चंदो इव = चंदो व्व.

चौथा पाठ

कृदन्त

कृत प्रत्यय :—धातुओं से संज्ञा-विशेषण, अव्यय आदि बनाने के लिए जिन प्रत्ययों को धातुओं के साथ जोड़ा जाता है, उन्हें कृत्-प्रत्यय कहते हैं और उन प्रत्ययों के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जुड़ने से जो संज्ञा, विशेषण आदि रूप बनते हैं, उन्हें ही कृदन्त कहा गया है। प्राकृत व्याकरण के नियमानुसार इन कृदन्तों का निम्न प्रकार वर्गीकरण किया गया है।

(१) **वर्तमानकालिक कृदन्त** :—इस कृदन्त में किसी कार्य के लगातार होते रहने की सूचना मिलती है। जैसे :— हसंतो=हँसता हुआ, चलंतो=चलता हुआ। इस अर्थ में धातु के साथ (i) न्त (शतृ) (ii) माण (शानच्), एवं (iii) ई प्रत्यय जोड़े जाते हैं। प्रथम दो प्रत्यय पुलिंग एवं नपुंसक लिंग में तथा तीसरा प्रत्यय स्त्री-लिंग का सूचक होता है। इसमें 'ई' के स्थान में कहीं कहीं 'न्ती' एवं 'माणि' का प्रयोग भी पाया जाता है।

न्त, माण एवं ई प्रत्यय के पूर्व में आने वाले 'अ' स्वर के स्थान में विकल्प से 'ए' हो जाता है। संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार परस्मैपदी धातुओं में श.ट प्रत्यय एवं आत्मनेपदी धातुओं तथा कर्मणि प्रयोग में शानच (आन अथवा मान) प्रत्ययों का विधान है। लेकिन प्राकृत व्यापार में वह नियम लागू नहीं होता। इसके उदाहरणार्थ कुछ कृदन्त रूप यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं :—

धातु	प्रत्यय	– पुल्लिग	– नपुंसकलिंग	– स्त्रीलिंग–
हस् धातु–	(न्त)	हसंतो,	हसंतं,	(ई) हसंती,
से हंसने	(शतृ)	हसेंतो	हसेंतं,	हसेंती
अर्थ में	(माण।	हसमाणोः	हसमाणं	(ई) हसमाणी,
	(शानच्)	हसेमाणो	हसेमाणं	(ई) हसमाणी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भू > हो = होने के अर्थ में	न्त (शतृ)	होअंतो, होएंतो	होअंतं होएंतं	(ई) होअई, होएइ
	माण (शानच्)	होअमाणो, होएमाणो	होअमाणं होएमाणं	होअमाणी, होएमाणी

इसी प्रकार गम् (गच्छंतो), पा (पाअंतो) चल (चलंतो) दा (देंतो) आदि कृदन्त रूप भी जानना चाहिए। वर्तमान-कालिक कृदन्त का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है :—

(क) **कर्मणि वर्तमान कृदन्त :**—इस कृदन्त में धातु में कर्मवाच्य के प्रत्यय (ईअ, इज्ज) जोड़कर उसी के साथ न्त, माण एवं ई प्रत्यय जोड़ देते हैं। जैसे :—हस् धातु से हस + ईअ + न्त + ओ = हसीअंतो। हस् + ईअ + माण + ओ = हसीअमाणो। हस + इज्ज + न्त + ओ = हसिज्जंतो, हसिज्जमाणो आदि।

(ख) **भावि वर्तमान कृदन्त :**—इसमें भावि प्रत्यय (ईअ, इज्ज) जोड़कर उसी के साथ न्त, माण प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे :—भण् (कहना) धातु से भण् + ईअ + न्त = भणीअंतं, भणीअमाणं। भण + इज्ज + न्त = भणिज्जंतं, भणिज्जमाणं।

(ग) **प्रेरक कर्तरि वर्तमान कृदन्त :**—इसमें धातु के प्रेरक (अ, ए, आव, आवे प्रत्ययान्त) रूप में न्त, माण और ई प्रत्यय जोड़ने पर कर्तृवाच्य में प्रेरणार्थक वर्तमान कृदन्त के रूप बन जाते हैं। जैसे हस् धातु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से हासंतो, हासेंतो; हासमाणो, हासेमाणो, हसावंतो, हसावेंतो, हसावमाणो, हसावेमाणो आदि। इसी प्रकार कृ धातु (कर) के कारंतो, कारेंतो, करावंतो आदि रूप भी बनते हैं।

(घ) **प्रेरक कर्मणि वर्तमान कृदन्त :**—इसमें धातु में प्रेरक प्रत्यय (अ, ए, आव, आवे) जोड़कर उसके साथ कर्म-प्रत्यय (ईअ, इज्ज) जोड़ें। उसके बाद न्त, माण और ई प्रत्यय जोड़ने से उक्त कृदन्त के रूप बन जाते हैं। जैसे :—हस् धातु से (हस्+अ+ईअ+न्त=) हासीअंतो। इसी प्रकार हासीअमाणो, हासिज्जमाणो, हसावीअंतो, हसीवीअमाणो, हसाविज्जंतो, हसाविज्जमाणो।

२. **भूतकालिक कृदन्त :—**

प्रस्तुत कृदन्त में किसी कार्य के समाप्त हो जाने की सूचना देने के लिए "अ" का प्रयोग किया जाता है। संस्कृत-भाषा में इसके लिए क्त (त्) एवं क्तवतु (तवत्) प्रत्ययों के प्रयोग मिलते हैं। इसमें कुछ प्रयोग ऐसे मिलते हैं, जो संस्कृत से ध्वनि-परिवर्तन के नियमों से बनाए गए हैं। उसमें 'अ' को कहीं-कहीं 'द' और 'त' भी हो जाता है। अतः प्रस्तुत कृदन्त में अ, द अथवा त प्रत्ययों के जुड़ने से धातु के अन्त के 'अ' के स्थान में 'इ' हो जाता है। जैसे :—

धातु	'अ' प्रत्यय	'द' प्रत्यय	'त' प्रत्यय	संस्कृत रूप
पठ् (पढ)	पढिओ	पढिदो	पढितो	पठितः (पढा)
गम् (गम)	गमिओ	गमिदो	गमितो	गतः (गया)
कृ (कर)	करिओ	करिदो	करितो	कृतः (किया)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्य नियम

(१) भूत कृदन्त के कर्तृवाच्य एवं कर्मवाच्य में कोई विशेष भेद नहीं पाया जाता। किन्तु कहीं-कहीं संस्कृत के कर्मणि भूत कृदन्त में 'व' जोड़कर उसे प्रदर्शित किया जाता है। जैसे :—कृ धातु से कय+वं=कयवं (कृतवान्)। स्पृष्ट धातु से पुट्ठ + वं=पुट्ठवं (स्पृष्टवान्) आदि।

(२) प्रेरणार्थक भूत-कृदन्त में आवि और इ ('इ' प्रत्यय होने पर उसके उपान्त्य में 'अ' को 'आ' होता है) प्रत्यय के जोड़ने के बाद भूत-कृदन्त के प्रत्यय धातु में जोड़ने से प्रेरणार्थक भूत-कृदन्त के रूप बनते हैं। जैसे :—कृ धातु से कर + आवि + अ=कराविअं (करवाया)। हस् धातु से हसाविअं (हंसवाया या हसाया)। कर+इ=कारिअं (कराया) आदि।

(३) सम्बन्ध सूचक भूत-कृदन्त :—इसमें 'कर' अथवा 'करके' इस अर्थ में अथवा जब एक कर्ता की अनेक क्रियाएँ होती हैं, तब पूर्वकालिक-क्रिया-बोधक धातुओं के साथ तुं (उ) एवं तूण (ऊण) आदि प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं। तुआण (उआण), इत्ता, इत्ताण, आय और आए प्रत्ययों का प्रयोग प्रायः अर्धमागधी प्राकृत में मिलता हैं।

(४) इसमें यह भी ध्यातव्य है कि प्रत्ययों (आय एवं आए को छोड़कर) के पूर्व में आने वाले 'अ' को 'इ' और 'ए' आदेश होते हैं। जैसे :—हस् धातु से—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हस + तुं = हसितुं, हसेउं (हँसकर)
हस + अ = हसिअ, हसेअ, (हँसकर)
हस + तूण = हसिऊण, हसिऊणं, हसेऊणं (हँसकर)
हस + तुआण = हसिउआणं, णं, हसेउआण, णं
गह धातु से—गह - आय = गहाय (ग्रहणकर)

३. **भविष्य कृदन्त :—**

भविष्य में किसी कार्य के होते रहने की सूचना देने के लिए धातु में 'इस्संत,' 'इस्समाण' और 'इस्सई' प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं। इनमें से इस्सई केवल स्त्रीलिंग में जोड़ा जाता है। यथार्थतः वर्तमान काल के प्रत्ययों में भविष्यत्-काल का बोधक 'इस्स' जोड़ने से ही भविष्यत्कालिक प्रत्यय बन जाते हैं। जैसे :—

हस् धातु से पुल्लिग में हस + इस्संत + ओ = हसिस्संतो हस + इस्समाण + ओ = हसिस्समाणो तथा स्त्रीलिग में हस + इस्सई = हसिस्सई रूप बनते हैं।

४. **सम्बन्ध सूचक भूत-कृदन्त :—**

जब किसी एक कर्त्ता की अनेक क्रियाएँ हों तो पूर्वकालिक क्रिया का बोध कराने वाली धातु के साथ तुं (उं) तूण (ऊण) आदि प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि तुआण (उआण), इत्ता, इत्ताण, आय, तथा आए प्रत्ययों का प्रयोग अर्धमागधी प्राकृतागमों में मिलते हैं। इसके विविध रूप बनाने के लिए प्राकृत-वैया-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करणों ने निम्न नियम निर्धारित किए हैं :—

(क) 'आय' एवं 'आए' को छोड़कर सम्बन्ध सूचक भूत-कृदन्त के प्रत्ययों के पूर्व में आने वाले 'अ' को 'इ' अथवा 'ए' आदेश होते हैं। जैसे :—

हस्+अ+तु=हसिउं, हसेउं
हस्+अ+अ=हसिअ, हसेअ.

(ख) तूण, तुआण और इत्ताण प्रत्ययों के 'ण' पर विकल्प से अनुसार होता है। जैसे :—

हस+तूण=हसिऊणं, हसिऊण, हसेऊणं, हसेऊण.
हस+तुआण=हसिउआणं, हसिउआण.
हस+इत्ता=हसित्ता, हसेत्ता.
हस+इत्ताण=हसित्ताणं, हसित्ताण, हसेत्ताणं, हसेत्ताण.

इसी प्रकार अन्य धातुओं—जैसे हो (होउ, होऊणं होऊण) तथा भण, नम, दा, कर, पढ़, ठा, आदि के भी इसी प्रकार के रूप बनते हैं।

(ग) ध्वनियों में परिवर्तन हो जाने से भी शब्द रूप बन जाते हैं। जैसे :—

वन्दित्वा-वंदित्ता.। गत्वा—गच्चा, गत्ता.
ज्ञात्वा-णच्चा.। सुप्त्वा—सुत्ता.

(घ) प्रेरणार्थक सम्बन्ध सूचक रूप बनाने के लिए प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने के बाद तु, तूण आदि प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे :—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर + श्रावि = करावि + तूण = कराविऊण
(कारयित्वा–करवाकर)

५. हेत्वर्थक अथवा निमित्तार्थक कृदन्त :—

जब कोई क्रिया किसी अन्य क्रिया के निमित से कि जाती है, तब उसे उक्त हेत्वर्थक अथवा निमितार्थक कृदन्त कहा जाता हैं। इसमें धातु के साथ "तु" (उं) "दु" एवं "त्तए" प्रत्यय जुटते हैं। इनमें 'त्तए' प्रत्यय का प्रयोग अर्धमागधी में तथा 'दु' प्रत्यय का प्रयोग शौरसेनी प्राकृत में प्रचुरता से मिलता है। इसके सामान्य नियम इस प्रकार हैं:—

(क) हेत्वर्थक कृत् प्रत्ययों के जुड़ने पर पूर्व में आने वाले 'अ' के स्थान पर 'इ, और 'ए' आदेश हो जाते हैं।
जैसे :— हस धातु से — हस + तु (उं) = हसिउं, हसेउं (हँसने के लिए)।
हस + दु = हसिदु, हसेदु।
हस + त्तए = हसित्तए, हसेत्तए

(ख) प्रेरणार्थक हेत्वर्थक कृदन्त बनाने के लिए प्रेरणार्थक प्रत्यय के साथ हेत्वर्थक प्रत्यय जोड़े जाते हैं।
जैसे :— हस + आवि + तु = हसाविउं,

६. विध्यर्थक अथवा कृत्य प्रत्यय कृदन्त :—

'चाहिए' 'योग्यता' अथवा 'विधि' आदि अर्थों में तव्व (अव्व) अणिज्ज और आणीअ प्रत्यय होते हैं। संस्कृत में यही प्रत्यय तव्यत्, अनीयर आदि (तव्य, केलिमर, यत्, क्यप् और ण्यत्) नामों से जाने जाते हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राकृत में विध्यर्थक प्रधान प्रत्यय 'अणिज्ज' है और 'अणीअ' का प्रयोग मागधी, अर्धमागधी एवं शौरसेनी प्राकृत में बहुलता से मिलता है।

(क) इसमें यह जानना आवश्यक है कि जब धातु में 'तव्व' एवं 'दव्व' प्रत्यय जोड़े जाते हैं, तब उसके साथ 'इ' एवं 'ए' आदेश हो जाते हैं। तथा 'य' प्रत्यय के स्थान पर 'ज्ज' हो जाता है। जैसे :—

धातु	तव्व (अव्व)-प्रत्यय	अणिज्ज-प्रत्यय	अणीय-प्रत्यय
श्रु धातु = सुण—	सुणअव्वं सुणेअव्वं	सुणिज्जं	सुणणीअं
ज्ञा धातु = जाण—	जाणिअव्वं जाणेअव्वं,	जाणिज्जं	जाणणीअं
धृ धातु = धर—	धरिअव्वं धरेअव्वं	धरिज्जं	धरणीअं

(ख) प्रेरक विध्यर्थक कृदन्त में धातु में प्रेरक प्रत्यय के साथ विध्यर्थ प्रत्यय जोड़ा जाता है।

जैसे :— हस + आवि + तव्व = हसाविअव्वं।

७. शीलधर्म वाचक (कर्तृ वाचक) कृदन्त :—

शीलधर्म (स्वभाव) सूचक अर्थ में धातु के साथ 'इर' प्रत्यय लगता है। जैसे :—हस धातु से—हस + इरे- = हसिरो (हंसने की स्वभाव वाला) हस + इर + आ = हसिरा (हंसने की स्वभाव वाली), आदि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाँचवाँ पाठ

तद्धित—प्रत्यय-प्रकरण

अर्थ-विशेष को प्रकट करने के लिए जिन प्रत्ययों को संज्ञा आदि शब्दों में जोड़ा जाता है, उन्हें तद्धित-प्रत्यय कहते हैं। ये तद्धित-प्रत्यय सामान्यतया १० प्रकार के माने गए हैं, जो निम्न प्रकार हैं :—

१. **अपत्यार्थक** :— अपत्य (सन्तान-पुत्र-पुत्री) अर्थ के प्रसंग में अ, ई, आयण, एय, ईण आदि प्रत्यय जोड़े जाते है। किसी वंश अथवा गोत्र में उत्पन्न पौत्र आदि के लिए भी इन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—

अ—वसुदेव + अ—वसुदेवस्स अपत्तं = वासुदेवो-
(वसुदेव का पुत्र)

ई—दशरह + ई—दसरहस्स अपत्तं = दासरही-
(दशरथ का पुत्र)

आयण-नड + आयण—नडस्स अपत्तं = नाडायणो-
(नट का पुत्र)

एय—कुलडा + एय—कुलडाए अपत्तं = कोलडेया-
(कुलटा का पुत्र)

ईण—महाउल + इण—महाउलस्स अपत्तं =
महाउलीणो-
(महाकुल का पुत्र)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२. **तुलनात्मक-अतिशयार्थक :—**

जब किन्हीं दो की तुलना में किसी एक का उत्कर्ष अथवा अपकर्ष दिखाया जाता है, तब विशेषण-वाचक शब्द में 'अर', तथा 'ईअस', एवं जब दो से अधिक की तुलना में किसी एक का उत्कर्ष या अपकर्ष प्रदर्शित किया जाता है, तब 'अम' एवं 'इट्ठ' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—

विशेषण—	अर	अम
पिअ (प्रिय)—	पिअअर	— पिअअम
खुद्द (क्षुद्र)—	खुद्दअर	— खुद्दअम
अप्प (अल्प)—	अप्पअर	अप्पअम
अहिय (अधिक)	अहियअर	अहियअम

विशेषण—	ईअस	इट्ठ
अप्प (अल्प)	कणीअस	कणिट्ठ
धम्मी (धर्मी)	धम्मीअस	धम्मिट्ठ
गुरु —	गरीअस	गरिट्ठ

३. **मत्वर्थीय :—**

किसी वस्तु के अधिकारी की (अर्थात् 'वान्' या 'वाला') सूचना देने के लिए इल्ल, ऊल्ल, आल, आलु, इर, वंत, मंत, इत्त, मण आदि प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। इन प्रत्ययों का अर्थ दो प्रकार से किया जाता है—(क) "इसके पास है" (तदस्य अस्ति) तथा (ख) "इसमें है" (तदस्मिन् अस्ति) जैसे :—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इल्ल—	गुण + इल्ल =	गुणिल्लो	(गुणवान्)
	सोहा + इल्ल =	सोहिल्लो	(शोभावान्)
उल्ल—	वियार + उल्ल =	वियारुल्लो	(विचारवान्)
आल—	रस + आल =	रसालो	(रसवान्)
आलु—	दया + आलु =	दयालू	(दयावान्)
	लज्जा + आलु =	लज्जालु	(लज्जावान्)
इर—	गव्व + इर =	गव्विरो	(गर्ववान्, अहंकारी)
वंत—	धण + वंत =	धणवंतो	(धनवान्)
मंत—	पुण्ण + मंत =	पुण्णमंतो	(पुण्यवान्)
	सिरि + मंत =	सिरिमंतो	(श्रीमान्)
इत्त—	कव्व + इत्तो =	कव्वइत्तो	(काव्यवान्)
मण—	सोहा + मण =	सोहामणो	(शोभावान्)

४. भावार्थक :—

भाव वाचक संज्ञा बनाने के लिए 'इमा' और 'त्तण' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। "इमा' प्रत्यय स्त्रीलिंग एवं 'त्तण' प्रत्यय पुल्लिग एवं नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे :—

इमा—	पुप्फ + इमा =	पुप्फिमा	(पुष्पत्वम्)
	लघु + इमा =	लघिमा	(लघुत्वम्)
त्तण—	फल + त्तणं =	फलत्तणं	(फलत्वम्)
	माणुस + त्तणं =	माणुसत्तणं	(मनुष्यत्वम्)

५. इदमार्थक :—

"यह इसका है" इस प्रकार का सम्बन्ध बतलाने के लिए 'केर' एवं 'एच्चय' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे :—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केर—	पर + केर =	परकेरं	(दूसरे का)
	अम्ह + केरं =	अम्हकेरं	(हमारा)
	राय + केरं =	रायकेरं	(राजा का)
एच्चय-	अम्ह + एच्चयं =	अम्हेच्चयं	(हमारा)
	तुम्ह + एच्चयं =	तुम्हेच्चयं	(तुम्हारा)

६. **सादृश्यार्थक :—**

"यह इसके समान है" यह अर्थ व्यक्त करने के लिए "व्व" प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे :—

चंद + व्व = चंदव्व (चन्द्रमा के समान)
महु + व्व = महुव्व (मधु के समान)

७. **भवार्थक :—**

"होने" सम्बन्धी अर्थ बतलाने के लिए अथवा किसी वस्तु में अन्य किसी दूसरी वस्तु के होने की सूचना देने हेतु 'इल्ल' एवं 'उल्ल' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे :—

प्रत्यय	पुल्लिग	स्त्रीलिग
इल्ल—	गाम + इल्ल = गामिल्लो (ग्राम में है)	गामिल्ली
	हेट्ठ + इल्ल = हेट्ठिल्लो	हेट्ठिल्ली
उल्ल—	नयर + उल्लं = नयरुल्लं	नयरुल्ली
	तरु + उल्लं = तरुल्लं	तरुल्ली

८. **आवृत्यार्थक :—**

"दो बार" "तीन बार" आदि क्रिया की गणना करने के लिए संख्यावाची शब्दों के साथ "हुत्त" एवं 'खुत्त' प्रत्यय लगाए जाते हैं। जैसे :—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुत्त— एय + हुत्तं = एयहुत्तं, एयखुत्तं (एक बार)
दु + हुत्तं = दुहुत्तं, दुखुत्तं (दो बार)
सय + हुत्तं = सयहुत्तं, सयखुत्तं (सौ बार)

९. कालार्थक :

"जिस समय," "उस समय" आदि काल-बोध कराने वाले 'एक्क', 'सव्व' आदि शब्दों के साथ "सि" सिअं, एवं 'इआ' प्रत्यय लगाए जाते हैं। जैसे :—

एक्क + सि = एक्कसि (एक समय)
एक्क + सिअं = एक्क सिअं (,,)
एक्क + इआ = एक्कइआ = (एक समय)
सव्व + सि = सव्वसि = (सभी समय)
सव्व + सिअं = सव्वसिअं = (,,)
सव्व + इआ = सव्वइआ = (,,)

१०. परिमाणार्थक :—

मात्रा अथवा परिमाण व्यक्त करने के लिए इत्तिअ, एत्तिअ, एत्तिल एवं एद्दह प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—

ज + इत्तिअं = जित्तिअं (यावत्)
ज + एत्तिअं = जेत्तिअं (यावत्)
ज + एत्तिलं = जेत्तिलं (यावत्)
ज = एद्दह = जेद्दहं (यावत्)

११. विभक्त्यर्थक क्रिया-विशेषण :—

पंचमी एवं सप्तमी विभक्ति में क्रमशः त्तो, दो (पंचमी) एवं हि, ह एवं त्थ (सप्तमी) प्रत्यय जुड़ते हैं। जैसे :—

त्तो—सव्व + त्तो = सव्वत्तो = (पंचमी)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दो—सव्व + दो = सव्वदो = (पंचमी)
हि—त + हि = तहि = (सप्तमी)
ह—त + ह = तह = ,,
त्थ—त + त्थ = तत्थ = ,,

१२. स्वार्थिक :—

संस्कृत के स्वार्थिक 'क' प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से अ, इल्ल, उल्ल, ल एवं ल्ल आदि आदेश होते हैं। जैसे :—

अ—चंद + अ = चंदओ, चंदो.
इल्ल—पल्लव + इल्ल = पल्लविल्लो, पल्लवो.
उल्ल—हत्थ + उल्ल = हत्थुल्लो, हत्थो
ल —पत्त + ल = पत्तलं.
ल्ल —नव + ल्ल = नवल्लो
एक + ल्ल = एकल्लो.

छठवाँ पाठ

स्त्री प्रत्यय

किसी भी व्याकरण के नियम के अनुसार स्त्रीलिंग शब्द दो प्रकार के माने गए हैं—(१) मूल स्त्रीलिंग शब्द अर्थात् जिन शब्दों का मूल अर्थ स्त्रीलिंग सूचक है। जैसे—लच्छी (लक्ष्मी) माला, लदा (लता), जडा (जटा) आदि। (२) वे स्त्रीलिंग शब्द, जो प्रत्यय जोड़कर बनाए जाते हैं। इस नियम के अनुसार पुल्लिग शब्दों में स्त्री-वाचक प्रत्यय जोड़ देने से वे स्त्रीलिंग सूचक शब्द बन जाते हैं। जैसे :—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राया (राजा) शब्द से ई प्रत्यय जोड़कर (राया + ई) = राणी
बंभण = (ब्राह्मण +) = बंभणी आदि।

संस्कृत-व्याकरण की दृष्टि से स्त्री प्रत्यय आठ प्रकार के हैं :-(१) टाप् (२) डाप् (३) चाप् (४) ङाप् (आ) (५) ङीष्, (६) ङीन् (ई) (७) ऊङ (ऊ), (८) ति। किन्तु चूँकि प्राकृत-भाषा की सरलीकरण की प्रवृत्ति है, अतः उसमें केवल तीन प्रकार के ही स्त्री-प्रत्यय मिलते हैं :— (१) आ, (२) ई, (३) ऊ। इनके नियम निम्न प्रकार हैं :—

१. प्रायः अकारान्त शब्दों को स्त्री-वाचक बनाने के लिए "आ" प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे :—
बाल + आ = बाला (कन्या)। वच्छ + आ = वच्छा (वत्सा)
पोड + आ = पोढा (प्रौढा)

२. संस्कृत-भाषा के नकारान्त (शब्द के अन्त में 'न' आने वाले) तकारान्त (शब्द के अन्त में 'त' आने वाले) एवं रकारान्त शब्दों को स्त्री-वाचक बनाने के लिए 'ई' प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे :—

(क) न्—मालिन + ई = मालिणी (मालिनी)
राया + ई = राणी (रानी)
बंभण + ई = बंभणी (ब्राह्मणी)
त्—पुत्तवअ + ई = पुत्तवई (पुत्रवती)
धणवअ + ई = धणवई (धनवती)
सिरिमअ + इ = सिरिमई (श्रीमती)
र्—कुंभआर + ई = कुंभआरी, (कुम्हारी)
सुवण्णआर + ई = सुवण्णआरी (सुनारिन)
कुमार + ई = कुमारी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ख) नर्तक, खनक पथिक, गौर, मत्स्य, मनुष्य, हरिण आदि शब्दों को स्त्रीलिंग बनाने हेतु "ई" प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे :—

णट्टअ + ई = णट्टई (नर्तकी) गोर + ई = गोरी,
खणअ + ई = खणई (खनकी), माणुस + ई = माणुसी
हरिण + ई = हरिणी णअ + ई = णई (नदी)

(ग) अकारान्त जातिवाचक शब्दों को स्त्री-वाचक बनाने के लिए भी 'ई' प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे :—

वग्घ + ई = वग्घी (व्याघ्री)
सीह + ई = सीही (सिंहनी) हंस + ई = हंसी
सूअर + इ = सूअरी (शूकरी)
रक्खस + ई = रक्खसी (राक्षसी)

(घ) संस्कृत-भाषा के इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, मृड, हिम (महत् अर्थ में) अरण्य (महत् पर्व में), यव (दुष्ट अर्थ में) यवन् (लिपि अर्थ में) मातुल आदि शब्दों को स्त्री-वाची बनाने के लिए 'ई' प्रत्यय तथा उसके पूर्व "आण" जोड़ दिया जाता है। जैसे :—
इंद + आण + ई = इंदाणी; भव + आण + ई = भवाणी (पार्वती). वरुण + आण + ई = वरुणाणी; सव्व + आण + ई = सव्वाणी.

इसी प्रकार रुद्राणी, मिडाणी, हिमाणी अरण्णाणी, यवाणी, यवणाणी, माउलाणी शब्द बनते हैं।

(ङ) उपाध्याय एवं आचार्य की सूचना देने के लिए 'ई'

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्यय के पूर्व 'आण' जोड़ा जाता है। जैसे :—

आइरिय + आण + ई = आयरिया (आचार्याणी)

उवज्झाय + आण + ई = उवज्झायाणी (उपाध्यायानी)

किन्तु जब कोई महिला स्वयं ही उपाध्याय अथवा आचार्य (Teacher) हो तब उसमें 'आ' प्रत्यय होता है। जैसे :—उवज्झाय + आ = उवज्झाया

आयरिय + आ = आयरिया

(च) आर्य एवं क्षत्रिय शब्दों को स्त्री वाची बनाने में 'ई' प्रत्यय एवं 'आण' विकल्प से होते हैं। जैसे :—

अय्या-अय्याणी; खत्तिया-खत्तियाणी,

(छ) शारीरिक अवयवों—मुख, केश, नासिका, उदर, जंघा, दन्त, कर्ण, शृंग, नख, में 'ई' प्रत्यय विकल्प से जुड़ता है। जब वह नहीं जुड़ेगा तब 'आ' प्रत्यय जटेगा। जैसे :—

चंदमुही-चंदमुहा; सुएसा-सुएसी, तुंगसासिइ-तुंगनासिआ, दीहोअरी-दीहोअरा, वज्जजंघिइ-वज्जजंघिआ, वज्जदंतिइ-वज्जदंतिआ, दीघकण्णिइ-दीहकण्णिआ, लंबसिंगइ-लंबसिंगिआ, वज्जणही-वज्जणहा, आदि।

(ज) अजातिवाचक शब्दों में अकारान्त पुल्लिग शब्दों को स्त्री-वाचक बनाने के लिए विकल्प से 'इ' प्रत्यय जुटता है। जैसे :—

नीली-नीला, काली-काला, हसमाणी-हसमाणा, इमीणं-इमाणं आदि।

(झ) धर्म-विधि से विवाहित महिला के लिए पाणिग्रहण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्द से 'ई' प्रत्यय जुड़कर पाणिग्गहीदि, तथा धर्म रहित विवाहित महिला के लिए ('आ' प्रत्यय जोड़कर) पाणिग्गहीदा, शब्द का प्रयोग होता है।

(ञ) संस्कृत भाषा के जानपद, कुंड, गोण, स्थल, भाग, नाग, कुश, कामुक आदि शब्दों को स्त्री वाचक बनाने के लिए विकल्प से 'ई' प्रत्यय जुटता है। जैसे :— जानपद + ई = जाणवई — जाणवआ, कुंडी-कुंडा, गोणी गोणा, थली-थला, भागी-भागा, नागी-नागा, कुसी-कुसा, कामुई-कामुआ, आदि।

३. 'ऊ' प्रत्यय के प्रयोग नगण्य ही मिलते हैं। जैसे— अज्ज + उ = अज्जु, अज्जआ (आर्या)

कुछ विशेष स्मरणीय शब्द :

पुल्लिग		स्त्रीलिंग
गिहवइ (गृहपति)	—	गिहवण्णी (गृहपत्नी)
विउसो (विद्वान्)	—	विउसी (विदुषी)
माणुसो (मनुष्य)	—	माणुसी (मनुष्यनी)
सहा (सखा)	—	सही (सखी)
मुणि (मुनि)	—	मुणी (मुनि)
साहु (साधु)	—	साहू (साधु)
जुवा (युवक)	—	जुवई (युवती)
सुद्दो (शूद्रः)	—	सुद्दा, सुद्दी (शूद्रा, शूद्री)
तरुणो	—	तरुणी
महिसो	—	महिसी
निउणो (निपुण)	—	निउणा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीयो	(दूसरा)	—	वीया
सेट्ठि	(सेठ)	—	सेट्ठिनी (सेठानी)
पइ	(पति)	—	भज्जा (भार्या, पत्नी)
पिअो	(पिता)	—	माआ (माता)
पुरिसो	(पुरुष)	—	इत्थी (स्त्री)
राया	(राजा)	—	रण्णी (रानी)
भाया	(भ्राता)	—	बहिणी (बहिन)

सातवाँ पाठ

कारक एवं विभक्तियाँ :—

कारक—

प्राकृत-व्याकरण के आचार्य हेमचन्द्र ने कारक की परिभाषा बतलाते हुए कहा है कि—"क्रियान्वयि कारकम्" अर्थात् कारक उसे कहते हैं, जिसका सम्बन्ध क्रिया (Verb) के साथ हो। पुनः उन्होंने कहा है कि "क्रियाहेतु : कारकम्" अर्थात् क्रिया (Verb) की उत्पत्ति में जो सहायक हो, उसे कारक कहते हैं।

विभक्ति—

विभक्ति की परिभाषा के प्रसंग में एक वाक्य बहुत ही प्रसिद्ध है—"संख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः" अर्थात् संख्या एवं कारक का जो बोध (ज्ञान) करावे उसे "विभक्ति" कहते हैं। जैसे :—'पुरिसाणं' से अनेक पुरुषों का ज्ञान तो होता है और उसमें षष्ठी विभक्ति भी है, किन्तु वह कारक नहीं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारक और विभक्ति में अन्तर —

यद्यपि व्याकरण का यह नियम है कि कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है, जैसे :— रामो गामं गच्छइ—राम ग्राम को जाता हैं। किन्तु कारक एवं विभक्ति की परिभाषाओं का अध्ययन करने से यह स्पष्ट है कि दोनों में बहुत अन्तर है। सब से पहला अन्तर तो यह है कि एक ही वाक्य में कारक कुछ होता है और विभक्ति दूसरी ही होती है, जैसे—कंसो किण्हेण हओ (कंस कृष्ण के द्वारा मारा गया)।

उक्त वाक्य में मारण-क्रिया का कर्त्ता (करने वाला) कृष्ण है किन्तु उसकी विभक्ति प्रथमा न होकर तृतीया-विभक्ति है। इसी प्रकार मारण-क्रिया का असली कर्म कंस है, उसमें द्वितीया विभक्ति न होकर उसे प्रथमा विभक्ति में रखा गया है।

प्राकृत भाषा में कारक एवं विभक्तियों से सम्बन्धित नियम संस्कृत के समान ही हैं, फिर भी उनके व्यवहार में कहीं-कहीं अन्तर भी पाया जाता है। जैसे :—

(१) जहाँ संस्कृत में ७ विभक्तियाँ होती हैं, वहीं प्राकृत में ६ विभक्तियाँ होती हैं। क्योंकि इसमें चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्ति एक समान होती है। जैसे :—णमो देवस्स (नमः देवाय) = देवता के लिए नमस्कार हो। मुणीण देई (मुनिभ्यो ददाति) = मुनियों के लिए देता है।

२. द्वितीया, तृतीया, पंचमी एवं सप्तमी विभक्तियों के स्थान पर षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे :—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—द्वितीया में षष्ठी वि०—सीमंधरस्स वंदे=(सीमंधर की वन्दना करता हूँ)
—तृतीया से षष्ठी वि०—चिरस्स मुक्का=(चिरकाल से मुक्त हुई)
—पंचमी से षष्ठी वि०—चोरस्स वीहेइ = (चोर से डरता है)
—सप्तमी से षष्ठी वि०—पिट्ठीए केसभारो= (पीठ पर केशों का भार है)

३. द्वितीया एवं तृतीया विभक्ति के स्थान पर सप्तमी विभक्ति के प्रयोग मिलते है। जैसे—णयरे ण जामि (=नगर को नहीं जाता हूँ। तिसु तेसु अलंकिया पुहवी (= उन तीनों के द्वारा पृथ्वी अलंकृत हैं)।

४. पंचमी विभक्ति के स्थान पर कभी तृतीया एवं कभी सप्तमी विभक्ति के प्रयोग मिलते हैं। जैसे :—
चोरेण-वीहेइ (=चोर से डरता है)।
—विज्जालयम्मि पढिउं आगओ बालो (=विद्यालय से पढ़कर बालक आ गया है)।

५. अर्धमागधी प्राकृत में सप्तमी के स्थान में तृतीया विभक्ति के प्रयोग मिलते हैं। जैसे—
तेणं कालेणं तेणं समएणं—(उस काल में, उस समय में)।

कारकों की संख्या :—

पूर्व में कहा जा चुका है कि प्राकृत में ६ कारक एवं ६ विभक्तियाँ मानी गई हैं। सम्बोधन पृथक् विभक्ति नहीं मानी गई है। क्योंकि वह प्रथमा विभक्ति ही है। षष्ठी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवं चतुर्थी विभक्ति को भी एक समान माना गया है। इस प्रकार कारक निम्न प्रकार प्राप्त होते हैं :—

(१) **कर्त्ता कारक :—**

वह है, जो क्रिया का प्रधान कारक अर्थात् करने वाला हो। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि क्रिया के करने में जो स्वतन्त्र हो, उसे कर्त्ता-कारक कहते हैं। जैसे :—सामो गच्छइ (=श्याम जाता है) इसमें "गच्छइ" क्रिया का प्रधान कर्त्ता श्याम है। अतः श्याम कर्त्ता कारक है।

(२) **कर्म कारक :—**

क्रिया के व्यापार का फल सूचित करने वाली संज्ञा के रूप को कर्मकारक कहते हैं। अथवा कर्तृवाच्य के अनुक्त कर्म में (अर्थात् कर्त्ता को जो अभीष्ट हो, उसमें) कर्म कारक होता है। जैसे :—पयेण ओयणं भुंजइ (=दूध से चाँवल खाता है) इसमें कर्त्ता को यद्यपि दूध एवं चाँवल दोनों अभीष्ट हैं, फिर भी अभीष्टतम (सर्वाधिक इच्छित) चाँवल ही है, दूध तो उसमें केवल सहायक पदार्थ है, न कि प्रमुख। अतः ओयणं (चाँबल) में ही कर्म संज्ञा हुई है, न कि पय (दूध) में।

अन्य नियम—

(क) द्विकर्मक धातुओं का प्रयोग होने पर गौण-कर्म (अकथित) में अपादान कारक में भी द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे :—माणवअं पहं पुच्छइ (=बालक से मार्ग को पूछता है)। यहाँ पर पहं (पथ मार्ग) ही कर्त्ता का मुख्य अभीष्ट है और माणवक (बालक) तो अपादान-कारक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(माणवक से) होने के कारण गौण है। अतः पहं में द्वितीया विभक्ति होगी।

(ख) अभिओ (दोनों ओर), परिओ (चारों ओर), समया (समीप), निकहा (समीप), हा (खद), पडि (ओर, तरफ), सव्वओ (सभी ओर), धिअ (धिक्) उपरि-उवरि (ऊपर) समया, (समीप) इन शब्दों के योग में इनका जिनसे संयोग हो, उनमें कर्म कारक द्वितीया-विभक्ति होती है। जैसे :— अहिओ किसणं (कृष्ण के दोनों ओर), परिओ राम (राम के चारों ओर) गामं समया (गाँव के समीप), निकहा लकं (लंका के समीप) आदि।

(३) **करण कारक** —

जो क्रिया की सिद्धि में कर्त्ता के लिए सबसे अधिक सहायक हो। अथवा, अपने अभीष्ट-कार्य की सफलता के लिए कर्त्ता जिसकी सर्वाधिक सहायता ले। उस स्थिति में करण कारक होता है। जैसे :—कण्हेण बाणेण हओ कंसो (=कृष्ण ने बाण के द्वारा कंस को मारा)। प्रस्तुत उदाहरण में कर्त्ता कृष्ण ने कंस को मारने में सबसे अधिक सहायता बाण से ली, इसीलिए बाण में तृतीय विभक्ति हुई। यद्यपि कंस-वध में कृष्ण के हाथ एवं धनुष भी सहायक हैं, किन्तु वे प्रमुख नहीं हैं, इसलिए उनमें करण-कारक नहीं हुआ।

अन्य नियम—

(क) सह-साथ सूचक शब्द—सह समं, साअं एवं सद्धं के योग में तृतीया-विभक्ति होती है जैसे :—
पुत्तेण सह आअओ पिया-पिया (=पुत्र के साथ पिता आया)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लक्खणो रामेण समं गच्छइ (=लक्ष्मण राम के साथ जाता है)
,, ,, साअं ,, (,, ,, ,, ,,)।
,, ,, सद्धं ,, (,, ,, ,, ,,)।

(ख) जिस विकृत अंग के द्वारा अंगी में विकार ज्ञात हो, उस अंग में तृतीया विभक्ति होती है जैसे :—

पाएण खंजो (=पैर से लंगड़ा)।
कण्णेण बहिरो (=कान से बहिरा)

(ग) जिस हेतु (प्रयोजन) से कोई कार्य जाना जाय, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे :—
दंडेण घडो जाओ (=डंडे के कारण घड़ा उत्पन्न हुआ)।

(४) **सम्प्रदान-सम्बन्ध कारक—**

किसी के लिए क्रिया की जाय या वस्तु के दान देने के कारण कर्त्ता जिसे सन्तुष्ट करता है, उसे सम्प्रदान-सम्बन्ध कारक कहते हैं। इसमें चतुर्थी अथवा षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे:—विप्पाय विप्पस्स वा गावं देइ=ब्राह्मण के लिए गाय दान में देता है।

अन्य नियम—

(क) रुचि अर्थ में। जैसे :—हरिणो रोयइ भक्ति=हरि के लिए भक्ति अच्छी लगती है।

(ख) 'कर्ज लेना' धातु के योग में ऋण देने वाले में। जैसे—भत्ताय भत्तस्स वा धरइ मोक्खं हरि=हरि भक्त के लिए मोक्ष धारण करता है।

(ग) क्रोध एवं ईर्ष्या के अर्थ में, जैसे :—
हरिणो कुज्झइ=हरि के ऊपर क्रोध करता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरिणो दोहइ=हरि के ऊपर द्रोह करता है।

(घ) नमस्कार अर्थ में, जैसे :—
हरिणो णमो=हरि के लिए नमस्कार।

(५) **अपादान कारक**—
जिसमें किसी वस्तु के अलगाव की सूचना मिले उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—
धावंतो अस्सत्तो पडइ=दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।
अन्य नियम—

(क) घृणा, प्रमाद आदि के अर्थ में। जैसे—पावंतो दुगुच्छइ विरमइ=पाप से घृणा करता है।
धम्मत्तो पमायइ=धर्म से प्रमाद करता है।

(ख) असह्य पराजय के अर्थ में, जैसे :—अज्झयणत्तो-पराजयइ=अध्ययन को असह्य मानकर भागता है।

(ग) हेतु (कारण) के अर्थ में, जैसे :—
अण्णस्स हेउस्स वसइ=अन्न-प्राप्ति के प्रयोजन से रहता है।

(६) **अधिकरण कारक**—
किसी भी क्रिया के आधार को अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे—
मोक्खे इच्छा अत्थि=मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा है।
तिलेसु तैलं=तिल में तेल है।
यहाँ मोक्ष एवं तेल क्रिया के प्रमुख आधार होने से अधिकरण कारक है। इनमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आठवाँ पाठ

समास

परिभाषा—'समास' का शाब्दिक अर्थ 'संक्षेप' होता हैं। व्याकरण की दृष्टि से समास उसे कहते हैं, जब दो या दो से अधिक सुबन्त-पदों अर्थात् शब्दों को परस्पर में इस प्रकार से जोड़ा जाय कि जिससे शब्द का आकार छोटा हो जाने पर भी उसका अर्थ ज्यों का त्यों बना रहे। जैसे :- धम्मस्स पुत्तो=धम्मपुत्तो (धर्मपुत्रः)। यहाँ पर पूर्व-पद—धम्मस्स में धम्म के साथ जुड़ी हुई सम्बन्ध-कारक "स्स" विभक्ति का समास हो जाने के कारण लोप हो गया तथा वह संक्षिप्त होकर "धम्मपुत्तो" रह गया और उसके अर्थ में कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ।

सामासिक अथवा समस्त पद—जैसा कि ऊपर बताया गया था कि समास में प्रायः पूर्व-पद अथवा शब्द की विभक्ति का लोप हो जाता है, इसीलिए समास से सिद्ध होने वाले पद को सामासिक-पद अथवा समस्त-पद कहते हैं। जैसे—धम्मस्स+पुत्तो, ये दो पद हैं, किन्तु जब समास होकर यह "धम्मपुत्तो" हो गया, तब इसे सामासिक-पद अथवा समस्तपद कहा जायगा।

विग्रह—सामासिक पद में विभक्ति-चिन्ह जोड़कर जब उसे अलग-अलग पदों में विभक्त किया जाता है, तब इस क्रिया को "विग्रह" कहते हैं। जैसे :—धम्मपुत्तो का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विग्रह करते समय उसके पूर्वपद में "स्स" विभक्ति जोड़ने से उसका रूप इस प्रकार हो जायगा—धम्मस्स पुत्तो-धम्मपुत्तो। कलासु कुसलो-कलाकुसलो।

समास एवं विग्रह में अन्तर—जब सामासिक-पद के शब्दों में विभक्ति-चिन्ह जोड़कर उसे पृथक्-पृथक् रूप में बताया जाता है, तब उसे विग्रह कहते हैं। और इसके विपरीत जब विभक्ति का लोप करके दो या दो से अधिक पदों को जोड़ दिया जाता है, तब उसे समास कहते हैं, दोनों में यही अन्तर है।

समास के भेद :—प्राकृत-व्याकरण के अनुसार समास के प्रमुख रूप से चार भेद माने गए हैं :—

१ अव्वइ-भाव समास (अव्ययी-भाव-समास)
२ तप्पुरिस-समास (तत्पुरुष-समास)
३ बहुब्बीहि-समास (बहुव्रीहि-समास)
४ दंद-समास (द्वन्द्व-समास)

१ **अव्वइ-भाव-समास**—

अव्ययीभाव का अर्थ यह है कि पहले जो अव्यय नहीं था, वह भी अव्यय हो जाता है। प्रस्तुत समास में 'अव्यय' की प्रधानता होने के कारण पूर्व-पद का समस्त पद अव्यय हो जाता है। इस समास का प्रयोग निम्नलिखित ११ प्रकार के प्रसंगों में होता है :—

(१) विभक्ति के अर्थ में, जैसे :—

हरिम्मि इइ=अहिहरि (हरि के विषय में)

(२) समीप अर्थ में, जैसे—

राइणो समीवं=उवरायं (राजा के समीप)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३) समृद्धि-अर्थ में, जैसे—
मद्दाणं समिद्धि=सुमद्दं (मद्र-देश की समृद्धि)

(४) अभाव-अर्थ में, जैसे—
मच्छिआणं अहावो =णिम्मच्छिअं (मक्खियों का अभाव)

(५) अत्यय (विनाश)-अर्थ में, जैसे—
हिंमस्स अच्चओ=अइहिमं (जाड़े की समाप्ति)

(६) असम्प्रति (अनौचित्य) अर्थ में, जैसे—
णिद्दा संपइ ण जुज्जइ=अइणिद्दं (निद्रा के अनुपयुक्त काल में)

(७) पश्चात् अर्थ में, जैसे—
भोयणस्स पच्छा=अणुभोयणं (भोजन के बाद)

(८) यथाभाव अर्थ में, (=योग्यता, अनतिक्रम्य एवं वीप्सा अर्थात् द्विरुक्ति के अर्थ में) जैसे :—
(क) योग्यता अर्थ में—रूवस्स जोग्गं=अणुजोग्गं (रूप-के योग्य)
(ख) अनतिक्रम्य अर्थ में—सत्तिं अणक्कमिऊण=जहासत्ति (शक्ति के अनुसार)
(ग) द्विरुक्ति अर्थ में—दिणं दिणं पइ=पइदिणं (प्रतिदिन)

(९) आनुपूर्व्य (क्रम) अर्थ में, जैसे—
जेट्ठस्स अणुपुव्वेण=अणुजेट्ठं (ज्येष्ठ के क्रम में)

(१०) यौगपद्य (एक साथ) अर्थ में, जैसे—
चक्केण जुगवं=सचक्कं (चक्र के साथ-साथ)

(११) सम्पत्ति के अर्थ में, जैसे—
छत्ताणं संपइ=सछत्तं (क्षत्रियों की सम्पत्ति)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ **तप्पुरिस समास**—इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है। इसका पूर्वपद प्रायः विशेषण एवं उत्तरपद प्रायः विशेष्य होता हैं। किन्तु इसके लिंग एवं वचन उत्तरपद के अनुसार होते हैं। जैसे—राइणो पुरिसो में उत्तरपद पुरिसो की प्रधानता है। इसका रूप बनेगा—रायपुरिसो।

तत्पुरुष समास दो प्रकार का है :—(१) बहिकरण (=व्यधिकरण) तत्पुरुष-समास एवं (२) समाणाहिकरण (=समानाधिकरण) तत्पुरुष-समास।

(१) **बहिकरण तत्पुरुष समास**—इस समास को सामान्य तत्पुरुष-समास भी कहा जाता है। इसमें दोनों पद विभिन्न विभक्तियों वाले होते हैं। इसमें पूर्वपद द्वितीया, तृतीया आदि विभक्तियों वाला होता है और उत्तरपद प्रथमा-विभक्ति वाला होता है।

पूर्वपद की विभिन्न विभक्तियों के आधार पर इस समास को ६ भेदों में विभक्त किया गया है :—

(अ) **बीया (द्वितीया) तत्पुरुष** (अर्थात द्वितीयान्त एवं प्रथमान्त)-समास—इसमें सिअ, अतीअ, पडिअ, गअ, पत्त एवं आवण्ण शब्दों के प्रसंग में द्वितीया विभक्ति के रहने के कारण द्वितीया तत्पुरुष-समास होता है। जैसे :—किसणं सिओ=किसणसिओ (कृष्ण के सहारे); आसां अतीओ=आसासीओ (आशा से अधिक); अग्गि पडिओ=अग्गिपडिओ (अग्नि में गिरा हुआ), दिवं गओ=दिवगओ (मृत्यु को प्राप्त), सुहं पत्तो=सुहपत्तो (सुख-प्राप्त) कट्ठं आवण्णो=कट्ठावण्णो (कष्ट को प्राप्त)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(अ) **तइआ-तृतीया तत्पुरुष** (तृतीयान्त एवं प्रथमान्त-समास)—इसमें प्रथम पद तृतीया-विभक्ति का तथा अन्तिम पद प्रथमा-विभक्ति का होता है। जैसे :— दयाए जुत्तो = दयाजुत्तो (दया से युक्त); पंकेण लित्तो = पंकलित्तो (कीचड़ से लिप्त)।

(इ) **चतुर्थी एवं षष्ठी तत्पुरुष (चतुर्थ्यन्त अथवा षठ्यन्त एवं प्रथमान्त)** समास—इसमें प्रथम पद में चतुर्थी या षष्ठी विभक्ति एवं अन्तिम पद में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे :—मोक्खाय णाणं=मोक्खणाणं (मोक्ष के लिए ज्ञान), लोयाय हिओ=लोयहिओ (लोक के लिए हितकारी)।

चूँकि चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्ति समान होती हैं, अतः षष्ठी के उदाहरण निम्न प्रकार दिए जा सकते हैं। जैसे:— पिसुणस्स वयणं=पिय वअणं (चुगलखोर का कथन)), देवस्स पुज्जओ=देवपुज्जओ (देवता का पुजारी)।

(ई) **पंचमी तत्पुरुष (पंचम्यन्त एवं प्रथमान्त) समास**—जैसे :—संसाराओ भीओ=संसारभीओ (संसार से भयभीत), थेणाओ भीओ=थेणभीओ (चोर से भय)

(उ) **सप्तमी तत्पुरुष (सप्तम्यन्त एवं प्रथमान्त) समास**—जैसे :—सहाए पंडिओ=सहापंडिओ (सभा में पण्डित), णरेसु सेट्ठो=णरसेट्ठो (नरों में श्रेष्ठ)।

(२) **समाणाहिकरण (समानाधिकरण) तत्पुरुष-समास**—इस समास का दूसरा नाम कर्मधारय-समास भी है। इसमें दोनों पद प्रथमा विभक्ति के होते हैं। जैसे-कण्हं तं वत्थं—**कण्हवत्थं** (कृष्ण-वस्त्र) यहाँ दोनों पद प्रथमा विभक्ति वाले हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसी कर्मधारय-समास का पूर्वपद जब संख्यावाची होता है, तब उसे द्विगु-समास कहा जाता है। जैसे :— तिण्णि लोया=तिलोया (तीनों लोक)। इसमें पूर्वपद संख्यावाची है तथा दोनों पद प्रथमान्त हैं। अतः यहाँ द्विगु-समास है। (इस द्विगु समास की चर्चा आगे की जायेगी)।

कर्मधारय अथवा समानाधिकरण तत्पुरुष समास निम्नलिखित ५ प्रकार का होता है।

(क) **विशेषण-पद** (अर्थात् विशेषण एवं विशेष्य)जैसे :- पीअं च तं वत्थं च=पीअवत्थं (पीला कपड़ा)। यहाँ पर पूर्वपद अर्थात् पीअं (पीला) वत्थं (वस्त्र) का विशेषण है और दोनों पद प्रथमा-विभक्ति के भी हैं। अतः यहां समानाधिकरण तत्पुरुष अथवा कर्मधारय-समास है। इसी प्रकार रत्तो य एसो घडो=रत्तघडो आदि जानना चाहिए।

(ख) **विशेषणोभय पद** (विशेषण+विशेषण) जैसे :— सीअं च तं उण्हं य जलं=सीउण्हं जलं (शीतल एवं उष्ण जल)।

(ग) **उपमान-पूर्वपद** (अर्थात् उपमान+साधारणधर्म)। जैसे :—घणो इव सामो=घणसामो (मेघ के समान श्याम वर्ण), मिओ इव चवला=मिअचवलो (मृग के समान चपल)

(घ) **उपमेयोत्तरपद** (अर्थात् उपमान+उपमेय)— जैसे :—चंदो इव मुहं=चंदमुहं (चन्द्रमा के समान मुख) वज्जो इव देहो=वज्जदेहो (बज्र के समान देह)।

(ङ) **उपमानोत्तर-पद** (अर्थात् उपमेय+उपमान)— जैसे :—पुरिसो वग्घो व्व=पुरिसवग्घो (व्याघ्र के समान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरुष)। पुरिसो एव्व वग्घो=पुरिसवग्घो (पुरुष ही व्याघ्र है)। संजमो एवं धणं=संजमधणं (संयम रूपी धन)।

(३) **द्विगु समास**—जैसा कि पूर्व में (दे० नियम सं० २) बतलाया गया था कि कर्मधारय-समास में जब पूर्वपद संख्यावाची हो और उत्तरपद संज्ञावाची हो, तब वहाँ द्विगु-समास होता है। जैसे :—तिण्हं लोयाणं समूहो=तिलोयं (तीनों-लोक) इसमें प्रथम पद तिण्हं (=तीन) संख्यावाची है तथा उत्तरपद लोयाणं (=लोक) संज्ञावाची है। इसमें दोनों पद प्रथमान्त भी हैं। अतः यहाँ द्विगु-समास है। इसी प्रकार नवण्हं तत्ताणं समूहो=नवतत्त (नवतत्त्वम्), चउरो दिसाओ=चउदिसा (चारों दिशाएं) आदि भी जानना चाहिए।

तत्पुरुष समास के अन्य भेद—इस समास के अन्य दो प्रकार के भेद और भी पाए जाते हैं—

(१) ण-तप्पुरिस (नञ् तत्पुरुष)-समास— इस समास में प्रथम शब्द नकारात्मक (अर्थात् निषेधार्थक) तथा दूसरा पद संज्ञा अथवा विशेषण होता है। इस समास में यह नियम ध्यान में रखना आवश्यक है कि इसमें व्यंजन से पहले आने वाले "ण" के स्थान में 'अ' तथा स्वर के पहले 'अ' के होने पर उसके स्थान में 'अण' हो जाता है। जैसे :—

ण=अ—ण लोओ=अलोओ (अलोक :)
ण दिट्ठं=अदिट्ठं (अदृष्टम्)
ण=अण—ण ईसो=अणीसो (अनीश :)
ण आयारो=अणायारो (अनाचार :)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२)—**पादि तप्पुरिस** (प्रादि तत्पुरुष) समास-तत्पुरुष समास में जब प्रथम पद 'प' (प्र) आदि उपसर्ग-सहित हो, तब वहाँ प्रादि तत्पुरुष समास होता है। जैसे :—पगतो आयरियो=पायरियो (प्राचार्य :)

३ **बहुव्वीही (बहुव्रीहि)-समास :**—जब सभी पद किसी अन्य पदार्थ के विशेषण के रूप में आवें, तब वहाँ बहुव्रीहि- समास होता है। इस समास को समझाने के लिए निम्न नियमों पर ध्यान देना आवश्यक है —

(क) इसके समस्त पद विशेषण होते हैं। अतः उनके लिंग, वचन आदि अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

(ख) इसका विग्रह (पदच्छेद) करते समय 'ज' (यत्) शब्द अथवा उसके अन्य किसी रूप का प्रयोग किया जाता है, जिससे उसके पदों को अन्य पदों के साथ सम्बन्ध की जानकारी मिलती है।

बहुव्रीहि समास दो प्रकार का है-(१) समानाधिकरण (अर्थात् समान-विभक्तिक) और (२) व्यधिकरण (अर्थात् असमान विभक्तिक)

(१) **समानाधिकरण बहुव्रीहि** (प्रथमान्त + प्रथमान्त) समास—विग्रह (पदच्छेद) में व्यवहार में आने वाले 'ज' (तत्) शब्द की द्वितीया आदि विभक्ति के भेद से यह समास ५ प्रकार का है।

जैसे :—आरुढो वाणरो जं (रुक्खं) सो=आरूढवाणरो-रुक्खो (ऐसा वृक्ष, जिस पर बन्दर बैठा है)। इसी प्रकार पत्तं णाणं जं सो=पत्तणाणी—मुणी (ज्ञान-प्राप्त मुनि)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ख) तृतीया—जैसे:—जिआणि इंदियाणि जेण सो =जिइंदियो मुणि (जितेन्द्रिय मुनि)

(ग) **चतुर्थी एवं षष्ठी**—जैसे:—दिण्णं धणं जस्स सो =**दिण्ण**धणो बंभणो (दत्तधनः ब्राह्मणः)। पीअं अंबरं जस्स सो=पीअंबरो कण्हो (पिताम्बरः कृष्णः) णीलो कंठो जस्स सो=णीलकंठो (मयूरः)

(घ) **पंचमी**—जैसे:—णट्ठो मोहो जाओ सो =णट्ठमोहो-मुणो (नष्टमोहः मुनिः), भट्ठो आयारो जाओ सो= भट्ठायारो जणो (भृष्टाचारः जनः),

(ङ) **सप्तमी**—जैसे :—वीरा णरा जम्मि गामे सो= वीरणरो गामो (ऐसा ग्राम, जहाँ वीर पुरुष रहते हों)।

(२) **व्यधिकरण बहुव्रीहि** (प्रथमान्त + षष्ठयन्त अथवा सप्तम्यन्त) समास—जैसे :—चक्कं पाणिम्मि जस्स सो= चक्कपाणी (चक्र है हाथ में जिसके, ऐसा विष्णु), चंदो सेहरम्मि जस्स सो=चंदसेहरो (शिव :)

बहुव्रीहि समास के अन्य भेद

(क) **उपमान पूर्वपद बहुव्रीहि समास**—जिसका प्रथम पद उपमान हो। यथा : हंसगमणं इव गमणं जाए सो= हंस-गमणा। गजाणण इव आणणो जस्स सो गजाणणो (गणेशः)।

(ख) **निषेधार्थक अथवा नञ्-बहुव्रीहि समास**—जैसे:— ण=अ—ण अत्थि णाहो जस्स सो=अणाहो (अनाथः) ण=अण—णत्थि उज्जमो जस्स सो=अणुज्जमो पुरिसो (अनुद्यमः पुरुषः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ग) **सहपूर्वपद बहुव्रीहि**—जिसके पूर्वपद में 'सह' अव्यय आवे। इस "सह" का तृतीयान्त पद के साथ समास होता है। इस 'सह' के स्थान में 'स' हो जाता है। जैसे:—पुत्तेण सह=सपुत्तो। फलेण सह=सहलं (सफलं) मूलेण सह=समूलं।

(ग) **प्रादि बहुव्रीहि**—प्र (प) नि (णि) आदि उपसर्ग के साथ बहुव्रीहि समास—जैसे :—पगिट्ठं पुण्णं जस्स सो=पपुण्णो जणो (प्रपुण्यो जनः)' निग्गया लज्जा जस्स सो=णिल्लज्जो णरो (निर्लज्जो नरः)

४ **दंद-द्वन्द्व-समास** :—प्रस्तुत समास में सभी पद प्रधान होते हैं। इसके विग्रह में दो या दो से अधिक संज्ञाएं 'च', 'य' अथवा 'अ' शब्द से जोड़ी जाती हैं। यह समास ३ प्रकार का है :—

(अ) **इतरेतरयोग द्वन्द्व समास**—इसमें समस्त पद में बहुवचन का प्रयोग होता है तथा इसके समस्त पद प्रधान होते हैं। जैसे :—सुरा या असुरा य=सुरासुरा (सुर एवं असुर सभी देव), मोरो अ हंसो अ वाणरो अ=मोरहंसवाणरा। पुण्णं य पावं य=पुण्णापावाइं।

(आ) **समाहार द्वन्द्व समास**—प्रस्तुत समास में प्रयुक्त समस्त पदों से समूह का बोध होता है। इसी कारण समस्त पद में नपुंसक एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे :—तवो य संजमो य एएसिं समाहारो=तवसंजमं=णाणं य दंसणं य चरित्तं य एएसिं समाहारो=णाणदंसणचरित्तं।

(इ) **एकशेष द्वन्द्व-समास**—जब समस्त पदों में से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केवल एक पद ही शेष रहे, तब उसे एकशेषद्वन्द्व-समास कहते हैं। इसमें लुप्त हुए पद का बोध उसमें प्रयुक्त वचन संख्या से होता है। जैसे :—

सासू या ससुरो य त्ति=ससुरा (श्वशुरौ)
माया य पिया य त्ति=पिअरा (पितरौ)

नौवाँ पाठ

शब्द रूप

शब्द की परिभाषा :—जब विविध वर्णों के मेल से किसी नाम अथवा वस्तु का संकेत मिलता है, उसे "शब्द" कहते हैं और इन्हीं सार्थक शब्दों के मेल से वाक्य बनता है, जो किसी भी भाषा का मूल आधार होता है।

इन्हीं सार्थक शब्दों को पद भी कहा जाता है। ये सार्थक शब्द अथवा पद दो प्रकार के होते हैं :—

१. **स्वाभाविक अथवा अविकारी**—इस श्रेणी में वे सार्थक शब्द आते हैं, जिनका रूप लिंग, वचन, कारक, काल आदि के अनुसार परिवर्तित नहीं होता। इसीलिए इन शब्दों को अव्यय भी कहा जाता है। इस प्रकार के अविकारी शब्दों में क्रिया-विशेषण, विस्मयादिबोधक, समुच्चय-बोधक एवं सम्बन्धबोधक शब्द आते हैं।

२. **विकारी अथवा कृत्रिम शब्द**—वे कहलाते हैं, जिनका रूप लिंग, वचन, कारक, काल एवं पुरुष के आधार पर परिवर्तित हो जाता है। इस कोटि में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया शब्द आते हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राकृत-शब्द रूपों की प्रमुख विशेषताएँ—

(१) प्राकृत-व्याकरण के अनुसार प्राकृत में द्विवचन नहीं होता। अतः समस्त शब्द-रूप एकवचन एवं बहुवचन में ही चलाए जाते हैं।

(२) चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्ति के शब्द रूप एक समान पाए जाते हैं। अतः प्राकृत में ६ कारक ही माने गए हैं। सम्बोधन को भी प्रथमा विभक्ति के अन्तर्गत माना गया है।

(३) ऋकारान्त (ऋ) एकारान्त (ए) ऐकारान्त (ऐ) ओकारान्त (ओ) एवं औकारान्त (औ) शब्द प्राकृत में नहीं पाए जाते।

(४) प्राकृत में संस्कृत के समान ही तीन ही पुरुष होते हैं—
(१) प्रथम पुरुष, (२) मध्यम पुरुष एवं (३) उत्तम पुरुष

(५) इसमें छह प्रकार के शब्द पाए जाते हैं :—

(क) अकारान्त ('अ' से अन्त होने वाले शब्द)
(ख) आकारान्त ('आ' ,, ,, ,, ,,)
(ग) इकारान्त ("इ" ,, ,, ,, ,,)
(घ) ईकारान्त ("ई" ,, ,, ,, ,,)
(ङ) उकारान्त ("उ" ,, ,, ,, ,,)
(च) ऊकारान्त ("ऊ" ,, ,, ,, ,,)

विशेष-ध्यातव्य :—यहाँ यह जान लेना आवश्यक है कि प्राकृत के 'जनभाषा' होने के कारण क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव से प्राकृत-भाषा के वैकल्पिक शब्द रूप भी बहुलता से मिलते हैं किन्तु प्रारम्भिक छात्रों की सुविधा की दृष्टि से उनके १-१ सरल शब्द-रूप ही यहाँ प्रस्तुत किए जावेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभक्ति-चिन्ह—जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि "विभक्ति" वह है, जिसके द्वारा गणना, अथवा संख्या और कारक का बोध हो। इनकी सूचना देने वाले संकेतों को विभक्ति-चिन्ह कहते हैं। जैसे :—पढमा (प्रथमा), वीया (द्वितीया), ओ, स्स, म्मि आदि।

शब्द रूप :—अकारान्त पुल्लिग शब्द-रूपों के कारक एवं विभक्ति-चिन्ह निम्न प्रकार होते हैं—

विभक्तियाँ	एकवचन	बहुवचन
पढमा (प्रथमा) —	ओ —	आ
वीया (द्वितीया)—	अं —	आ
तइया (तृतीया)—	ण, (एण) —	हि, (एहि)
चउत्थी एवं छट्ठी —	स्स —	ण, णं (आण, आणं)
पंचमी	— त्तो, हिंतो, सुंतो (आहिंतो, आसुंतो)	
सत्तमी (सप्तमी) —	म्मि—	सु (एसु)
संबोहण (सम्बोधन)-	ओ—	आ

इन विभक्ति-चिन्हों का प्रायोगिक रूप इस प्रकार होगा:—

विभक्तियाँ	एकवचन	बहुवचन
पढमा —	देव + ओ = देवो	देव + आ = देवा
वीया —	देव + = देवं	देव + आ = देवा
तइया —	देव + एण = देवेण	देव + एहि = देवेहि
चउत्थी, छट्ठी—	देव + स्स = देवस्स	देव + आणं = देवाणं
पंचमी —	देव + त्तो = देवत्तो	देव + आसुंतो = देवाहिंतो
		देव + आसुंतो—देवासुंतो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्तमी — देव + म्मि = देवम्मि देव + एसु = देवेसु
संवोहण — हे देव + ओ = हे देवो हे देव + आ = हे देवा।
ठीक इसी प्रकार निम्न शब्द-रूप भी जानना चाहिए। जैसेः-

अकारान्त पुल्लिंग "सव्व" शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	सव्वो		सव्वा
बी०	—	सव्वं	—	सव्वा
त०	—	सव्वेण	—	सव्वेहिं
च०, छ०	—	सव्वस्स	—	सव्वाणं
पं०	—	सव्वत्तो	—	सव्वाहितो, सव्वासुंतो
स०	—	सव्वम्मि	—	सव्वेसु

वीर-शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	वीरो	—	वीरा
बी०	—	वीरं	—	वीरा
त०	—	वीरेण	—	वीरेहि
च०, छ०	—	वीरस्स	—	वीराणं
पं०	—	वीरत्तो	—	वीराहितो, वीरासुंतो
स०	—	वीरम्मि	—	वीरेसु
संवो	—	हे वीरो	—	हे वीरा

वच्छ (वृक्ष) शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	वच्छो	—	वच्छा
बी०	—	वच्छं	—	वच्छा
त०	—	वच्छेण	—	वच्छेहि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च०, छ०	—	वच्छस्स	—	वच्छाणं
पं०	—	वच्छत्तो	—	वच्छाहिंतो, वच्छासुंतो
स०	—	वच्छम्मि	—	वच्छेसु
संबो	—	हे वच्छो	—	हे वच्छा

धम्म शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	धम्मो	—	धम्मा
बी	—	धम्मं	—	धम्मा
त०	—	धम्मेण	—	धम्मेहिं
च०, छ०	—	धम्मस्स	—	धम्माणं
पं०	—	धम्मत्तो	—	धम्माहिंतो, धम्मासुंतो
स०	—	धम्मम्मि	—	धम्मेसु
संबो	—	हे धम्मो	—	हे धम्मा

इसी प्रकार नरिंद, बंभण सेवग्र, चंद दंड मेह, गय क, स, ज एस इम आदि के शब्द-रूप भी चलेंगे।

'राय' शब्द संस्कृत के राजन् शब्द से बना है। उसके शब्द-रूपों में एकाध स्थान पर कुछ अन्तर हो जाता है। जैसे—

'राय' शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	राया	—	राया, राइणो
बी०	—	रायं	—	राया
त०	—	राएण	—	राएहिं
च०, छ०	—	रायस्स	—	राईणं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पं०	—	रायत्तो	—	रायाहितो, रायासुंतो
स०	—	रायम्मि	—	राएसु
संवो०	—	हे राया	—	हे राया

अप्पा (आत्मा)

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	अप्पा	—	अप्पा
वी०	—	अप्पं	—	,,
त०	—	अप्पेण	—	अप्पेहि
च०, छ०	—	अप्पस्स	—	अप्पाणं
पं०	—	अप्पत्तो	—	अप्पाहितो, अप्पासुंतो
स०	—	अप्पम्मि	—	अप्पेसु
संवो	—	हे अप्पा	—	हे अप्पा

इकारान्त एवं उकारान्त पुलिंग शब्द

प्राकृत में इकारान्त एवं उकारान्त पुलिंग शब्दों के विभक्ति-चिन्ह प्रायः एक समान होते हैं। जैसे :—

इकारान्त-उकारान्त—इकारान्त-उकारान्त

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०—	ई - ऊ	—	ई - ऊ	
वी०—	अं ऊँ	—	ईं - ऊँ	
त० —	णा - णा	—	हिं - हिं	
च०, छ०-	स्स- स्स	—	णं - णं	
पं० —	त्तो - त्तो	—	हिंतो, सुंतो-हिंतो, सुंतो	
स० —	म्मि-म्मि	—	सु - सु	
संवो—	इ - उ	—	ई - ऊ	

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसके प्रयोग इस प्रकार किए जा सकते हैं :—

इकारान्त मुनि शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	मुणी	—	मुणी
बी०	—	मुणिं	—	,,
त०	—	मुणिणा	—	मुणीहिं
च० स०	—	मुणिस्स	—	मुणीहिं
पं०	—	मुणित्तो	—	मुणीहिंतो, मुणीसुंतो
स०	—	मुणिम्मि	—	मुणीसु
संबो	—	हे मुणि	—	हे मुणी

हरि शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	हरी	—	हरी
बी०	—	हरिं	—	हरी
त०	—	हरिणा	—	हरीहिं
च०,छ०	—	हरिस्स	—	हरीणं
पं०	—	हरित्तो	—	हरीहिंतो, हरीसुंतो
स०	—	हरिम्मि	—	हरीसु
संबो	—	हे हरि	—	हे हरी

इसी (ऋषि) शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	इसी	—	इसी
बी०	—	इसिं	—	इसी
त०	—	इसिणा	—	इसीहि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च०,छ०	—	इसिस्स	—	इसीणं
पं०	—	इसित्तो	—	इसीहिंतो, इसीसुंतो
स०	—	इसिम्मि	—	इसीसु
संबो	—	हे इसि	—	हे इसी

अग्गि (अग्नि) शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	अग्गी	—	अग्गी
बी०	—	अग्गि	—	अग्गी
त०	—	अग्गिणा	—	अग्गीहिं
च०,छ०	—	अग्गिस्स	—	अग्गीणं
पं०	—	अग्गित्तो	—	अग्गिहिंतो, अग्गिसुंतो
स०	—	अग्गिम्मि	—	अग्गिसु
संबो	—	हे अग्गि	—	हे अग्गी

इसी प्रकार भूवइ (भूपति) करि अरि, गिरि, गहवइ, णरवइ, रवि आदि के शब्द रूप भी चलेंगे।

उकारान्त पुलिंग भाणु (सूर्य शब्द)

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	भाणू	—	भाणू
बी०	—	भाणु	—	,,
त०	—	भाणुणा	—	भाणुहि
च,०छ०	—	भाणुस्स	—	भाणूणं
पं०	—	भाणुत्तो	—	भाणुहिंतो, भाणुसुंतो
स०	—	भाणुम्मि	—	भाणुसु
संबो०	—	हे भाणु	—	हे भाणू

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाउ (वायु) शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	वाऊ	—	वाऊ
बी०	—	वाउं	—	,,
त०	—	वाउणा	—	वाऊहिं
च०, छ०	—	वाउस्स	—	वाऊणं
पं०	—	वाउत्तो	—	वाऊहिंतो, वाऊसुंतो
स०	—	वाउम्मि	—	वाऊसु
संवो०	—	हे वाउ	—	हे वाऊ

इसी प्रकार गुरु, साहु, धणु, सयंभु, मेरु, सव्वण्णु, आदि शब्द रूप भी चलेंगे।

प्राकृत में जिस प्रकार इकारान्त एवं उकारान्त पुल्लिग के शब्द रूप चलते हैं, उसी प्रकार उसके ईकारान्त एवं ऊकारान्त शब्द रूप चलते हैं।

स्त्रीलिंग के आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त उकारान्त एवं ऊकारान्त शब्द-रूप निम्न प्रकार चलेंगे—

आकारान्त शब्दों के विभक्ति चिन्ह

विभक्तियाँ		एकवचन	बहुवचन
प०	—	×	×
बी०	—	- (अं)	×
त०	—	आ	हिं
च०, छ०	—	,,	णं
पं०	—	,,	हिंतो, सुंतो
स०	—	,,	सु
संवो	—	×	×

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उक्त विभक्ति-चिन्हों के प्रयोग इस प्रकार किए जायँगे। जैसे :—

आकारान्त स्त्रीलिंग

माला "शब्द"

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	माला	—	माला
बी	—	मालं	—	माला
त०	—	मालाअ	—	मालाहिं
च० छ०	—	,,	—	मालाणं
पं०	—	,,	—	मालाहिंतो, मालासुंतो
स०	—	,,	—	मालासु
संबो०	—	हे माला	—	हे माला

लदा (लता) शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	लदा	—	लदा
बी०	—	लदं	—	लदा
त०	—	लदाअ	—	लदाहिं
च० छ०	—	,,	—	लदाणं
पं०	—	,,	—	लदाहिंतो, लदासुंतो
स०	—	,,	—	लदासु
संबो	—	हे लदा	—	हे लदा

इसी प्रकार सा सव्वा, जा, का, एसा, इमा कमला, कण्णा, अच्छरा, भज्जा, णिसा, दिसा, विज्जा आदि के शब्द रूप भी चलेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्त्रीलिंग इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त शब्दों के विभक्ति-चिन्ह (एक समान)

विभक्तियाँ	एकवचन इकारान्त—उकारान्त ईकारान्त—ऊकारान्त		बहुवचन इकारान्त—उकारान्त ईकारान्त—ऊकारान्त	
प०	— ी	ू	— ी	ू
बी०	— ं (अं)	ं अं	— ×	×
त०	— अ	अ	— हिं	हिं
च,छ०	— ,,	,,	— णं	णं
पं०	— ,,	,,	हिंतो, सुंतो,	हिंतो, सुंतो
स०	— ,,	,,	— सु	सु
संबो	— ×	×	— ×	×

उक्त चिन्हों का प्रयोग निम्न प्रकार किया जायगा :—

इकारान्त स्त्रीलिंग "राई" (रात्रि) शब्द

विभक्तियाँ	एकवचन	बहुवचन
प० —	राई —	राई
बी —	राई —	,,
त० —	राईअ —	राईहि
च०, छ०—	,, —	राईणं
पं० —	,, —	राईहितो, राईसुंतो
स० —	,, —	राईसु
संबो० —	हे राइ—	हे राई

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मइ (मति) शब्द

विभक्तियाँ	एकवचन	बहुवचन
प० —	मई —	मई
बी० —	मइं —	,,
त० —	मईअ —	मईहिं
च०, छ० —	,, —	मईणं
पं० —	,,	—मईहिंतो, मईसुंतो
स० —	,, —	मईसु
संबो० — —	हे मइ —	हे मई

ईकारान्त स्त्रीलिंग लच्छी (लक्ष्मी) शब्द

विभक्तियाँ	एकवचन	बहुवचन
प० —	लच्छी —	लच्छी
बी० —	लच्छि —	,,
त० —	लच्छीअ —	लच्छीहि
च०,छ० —	,, —	लच्छीणं
पं० —	,,	लच्छीहिंतो, लच्छीसुंतो
स० —	,, —	लच्छीसु
संबो —	हे लच्छि —	हे लच्छी

उकारान्त स्त्रीलिंग रज्जु (रस्सी) शब्द

विभक्तियाँ	एकवचन	बहुवचन
प० —	रज्जू —	रज्जू
बी० —	रज्जुं —	,,
त० —	रज्जूअ —	रज्जूहिं
च०, छ० —	,, —	रज्जूणं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पं०	—	रज्जूअ	—	रज्जूहिंतो, रज्जूसुंतो
स०	—	,,	—	रज्जूसु
संबो	—	हे रज्जु	—	हे रज्जू

इसी प्रकार धेणु (गाय) तणु आदि के भी शब्द रूप चलेंगे।

अकारान्त स्त्रीलिंग 'सासू' (सास) शब्द

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन
प०	—	सासू	—	सासू
बी	—	सासुं	—	,,
त०	—	सासूअ	—	सासूहिं
च०,छ०	—	,,	—	सासूणं
पं०	—	,,	—	सासूहिंतो, सासूसुंतो
स०	—	,,	—	सासुसु
संबो०	—	हे सासु	—	हे सासू

इसी प्रकार बहू, चमू (सेना), आदि के भी शब्द-रूप चलेंगे।

प्राकृत में नपुंसक-लिंग रूप प्रायः नहीं मिलते। कहीं-कहीं यदि मिलते भी हैं, तो उनके रूपो में प्रथमा-विभक्ति के एकवचन में अनुस्वार एवं बहुवचन में इं जोड़ दिया जाता है, बाकी के शब्द-रूप पुल्लिग अथवा स्त्रीलिंग के समान ही चलते हैं। जैसे :—**वणं आदि शब्दों के रूप। यथाः—**

विभक्तियाँ		एकवचन		बहुवचन	
पढमा	—	वणं	—	वणाइँ	शेष शब्द रूप
		धणं	—	धणाइँ	पुल्लिग
		फलं	—	फलाइँ	के समान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दहिं — दहीइं।
वारिं — वारीइं।
महुं — महुइं।

"हम" "तुम" के प्राकृत शब्द रूप सभी लिंगों में एक समान चलते हैं। उनके अनेक वैकल्पिक रूप होते हैं। किन्तु प्रारम्भिक छात्रों की सुविधा-हेतु यहाँ केवल १-१ सरल रूप ही दिया जा रहा है :—

"हम" (अस्मद्)-शब्द के रूप

विभक्तियाँ	एकवचन	बहुवचन
प० —	अहं —	अम्हे
ती० —	,, —	,,
त० —	मए —	अम्हेहिं
च०,छ०—	अम्हे —	अम्हाणं
पं० —	अम्हत्तो —	अम्हाहिंतो, अम्हासुंतो
स० —	अम्हम्मि —	अम्हेसु

"तुम" (युष्मद्) शब्द

विभक्तियाँ	एकवचन	बहुवचन
प० —	तुमं —	तुम्हे
पी० —	,, —	,,
त० —	तुमए —	तुम्हेहिं
च०,छ० —	तुम्हं —	तुम्हाणं
पं० —	तुम्हत्तो —	तुम्हाहिंतो, तुम्हासुंतो
स० —	तुम्हम्मि —	तुम्हेसु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्यावाची पुल्लिग "एक" शब्द के रूप

	एकवचन	बहुबचन	
प०	—एगो	— एगा	बाकी के शब्द-रूप 'सव्व'
वी०	—एगं	— ,,	शब्द के समान चलेंगे।

इसी प्रकार स्त्रीलिंग का एगा (=एक)-शब्द लता के समान और नपुंसक लिंग का एगं (एक) शब्द वणं (वन) के समान चलेंगे।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि प्राकृत में "एक" को छोड़ कर अन्य समी की गणना बहुवचन में होती है। अतः 'एक' को छोड़कर बाकी के संख्यावाची शब्दों के शब्द-रूप सभी लिंगों में समान होते हैं तथा केवल बहुवचन में ही चलते हैं। जैसे :—

बे (दो) शब्द

वि०	बहु०	वि०	बहु
प०	— बे, दुवे	वी०	— बे, दुवे
त०	— दोहि	च०,छ०	— दोण्हं
पं०	— दोहितो	स०	— दोसु

ति (तीन) शब्द

वि०	बहु०	वि०	बहु
प०	— तिण्णि	वी०	— तिण्णि
त०	— तीहि	च० छ०	— तीण्हं
पं०	— तीहितो	स०	— तीसु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चउ (चार) शब्द

विभक्तियाँ		बहुवचन
प०	—	चउरो
बी०	—	,,
त०	—	चऊहि
च०, छ०	—	चउण्हं
पं०	—	चऊहिंतो, चऊसुंतो
स०	—	चऊसु

इसी प्रकार पंच, छ, सत्त, अट्ठ, णव, दह, तेरह आदि के शब्द रूप भी जानना चाहिए।

दसवाँ पाठ

धातु रूप

परिभाषा—जिस मूल-शब्द से क्रिया का अर्थ निकलता हो, उसे धातु कहते हैं और जिस शब्द से किसी कार्य का करना अथवा प्रकट होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे:—पढ + इ क्रिया में मूल शब्द "पढ" धातु है, उसमें "इ" प्रत्यय जोड़कर उसे "पढ़इ" क्रिया बनाया, जिसका अर्थ हुआ—"पढ़ता है"। तात्पर्य यह कि क्रिया के मूल-रूप को धातु कहते हैं :

प्राकृत के धातु-रूपों की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं :—

(१) प्राकृत के धातु-रूपों में एकवचन एवं बहुवचन ही होता है। उसमें द्विवचन नहीं होता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२) पुरुष तीनों होते हैं-प्रथम-पुरुष, मध्यम-पुरुष एवं उत्तम-पुरुष।

(३) व्यञ्जनान्त धातुओं में 'अ' विकरण जोड़कर उन्हें स्वरान्त बना दिया जाता है।

(४) कर्तृवाच्य एवं कर्मवाच्य प्रायः एक समान होते हैं।

(५) आत्मनेपद का प्रायः लोप एवं परस्मैपद रूपों की प्रधानता मिलती है।

(६) वर्तमान, भूत, भविष्यत्, आज्ञार्थक, विध्यर्थक एवं क्रियातिपत्ति इन छह कालों की प्रधानता मिलती है।

(७) आज्ञार्थक एवं विध्यर्थक तथा भूत-काल एवं क्रियातिपत्ति के रूपों में प्रायः समानता दृष्टिगोचर होती हैं।

(८) धातु रूपों में भ्वादिगण की प्रधानता मिलती है।

(९) अस् धातु के वर्तमान, भविष्यत्, विधि, एवं आज्ञा के सभी वचनों एवं पुरुषों में एक समान रूप मिलते हैं।

(क) वर्तमान-काल के प्रत्यय-चिन्ह

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
पढमो पुरिसो	इ, ए	न्ति, न्ते
मज्झिम पुरिसो	सि, से	इत्था, ह
उत्तिम पुरिसो	मि	मो, मु

इन प्रत्यय-चिन्हों का प्रयोग इस प्रकार किया जायगा :-

(१) हो (होने अर्थ में भू-) धातु के रूप

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	होइ	होंति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म० पु०	—	होसि	—	होइत्था, होह
उ० पु०	—	होमि	—	होमो

(२) पढ (पढने अर्थ में पठ्) धातु

पुरुष		एकवचन		बहुवचन
प० पु०	—	पढइ	—	पढंति
म० पु०	—	पढसि	—	पढित्था, पढह
उ० पु०	—	पढामि	—	पढिमो

(३) हस् (हँसने अर्थ में-हस्—) धातु

पुरुष		एकवचन		बहुवचन
प० पु०	—	हसइ	—	हसंति
म० पु०	—	हससि	—	हसित्था
उ० पु०	—	हसामि	—	हसिमो

(४) गच्छ (जाने अर्थ में) धातु

पुरुष		एकवचन		बहुवचन
प० पु०	—	गच्छइ	—	गच्छंति
म० पु०	—	गच्छसि	—	गच्छित्था, गच्छह
उ० पु०	—	गच्छामि	—	गच्छिमो

(५) ण्ह (स्नान करने के अर्थ में) धातु

पुरुष		एकवचन		बहुवचन
प० पु०	—	ण्हाइ	—	ण्हांति
म० पु०	—	ण्हासि	—	ण्हाइत्था, ण्हाइ
उ० पु०	—	ण्हामि	—	ण्हामो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६) हण् (मारने अर्थ में) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— हणइ —	हणंति
म० पु०	— हणसि —	हणित्था, हणह
उ० पु०	— हणामि —	हणिमो

(७) कर (करने अर्थ में—कृ--) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— करइ —	करंति
म० पु०	— करसि —	करित्था, करह
उ० पु०	— करामि —	करिमो

(८) पा (पीने के अर्थ में) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— पाइ —	पांति
म० पु०	— पासि —	पाइत्था, पाह
उ० पु०	— पामि —	पामो

(९) अस् (है, "था" के अर्थ में) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— अत्थि —	अत्थि
म० पु०	— अत्थि, असि—	अत्थि
उ० पु०	— अत्थि, अम्हि-	अत्थि, अम्हो

विशेष :-अस् धातु पर पूर्वोक्त नियम पूर्ण रूप से लागू नहीं होते।

ध्यातव्य—धातु-रूपों का यही क्रम आगे के भूत, भविष्यत् आदि कालों में भी रखा जायगा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ख) भूतकाल के प्रत्यय (विन्ह)

विशेष--ध्यातव्य--(अ) भूतकाल में अकारान्त (अर्थात् संस्कृत में व्यंजनान्त) धातुओं में सभी पुरुषों एवं वचनों में "ईअ" प्रत्यय लगता है। (आ) अन्य आकारान्त एकारान्त एवं ओकारान्त धातुओं में सभी पुरुषों एवं सभी वचनों में 'हीअ," "ही," "सी," प्रत्यय जुटते हैं, उदाहरणार्थ—

पुरुष	एकवचन		बहुवचन	
पढमो पुरिसो	ईअ	—	ईअ	व्यंजनान्त
मज्झिमो पुरिसो	,,		,,	धातुओं
उत्तिम पुरिसो	,,	—	,,	के लिए

पुरुष	एकवचन	बहुवचन	
प० पु०—हीअ, ही, सी		हीअ, ही, सी	स्वरान्त
म० पु०— ,, ,, ,,		,, ,, ,,	धातुओं
उ० पु०— ,, ,, ,,		,, ,, ,,	के लिए

धातु रूपों में इनके प्रयोग इस प्रकार किए जावेंगे :—

(१) हो (होने अर्थ में भू) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	होहीअ, होही, होसी	—होहीअ, होही, होसी
म० पु० —	,, ,, ,,	— ,, ,, ,,
उ० पु० —	,, ,, ,,	— ,, ,, ,,

(२) पढ (पढने अर्थ में पठ्) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	पढिहीअ, पढिअ	पढिहीअ, पढिअ
	पढिही, पढिसी	पढिही, पढिसी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म० पु०	—	पढिही, पढिसी		पढिही, पढिसी
उ० पु०	—	,, ,,		,, ,,

(३) हस् (हँसने अर्थ में) धातु

पुरुष		एकवचन		बहुबचन
प० पु०	—	हसीअ	—	हसीअ
म० पु०	—	,,	—	,,
उ० पु०	—	,,	—	,,

(४) गच्छ (जाने के अर्थ में) धातु

पुरुष		एकवचन		बहुवचन
प० पु०	—	गच्छीअ	—	गच्छीअ
म० पु०	—	,,	—	,,
उ० पु०	—	,,	—	,,

(५) ण्ह (स्नान करने के अर्थ में) धातु

पुरुष	एकवचन				बहुवचन		
प० पु०—	ण्हाहीअ	ण्हाही,	ण्हासी	—	ण्हाहीअ,	ण्हाही,	ण्हासी
म० पु०—	,,	,,	,,	—	,,	,,	,,
उ० पु०—	,,	,,	,,	—	,,	,	,,

(६) हण् (मारने अर्थ में) धातु

पुरुष		एकवचन		बहुवचन
प० पु०	—	हणीअ	—	हणीअ
म० पु०	—	,,	—	,,
उ० पु०	—	,,	—	,,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७) कर (करने अर्थ में कृ) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	करीअ —	करीअ
म० पु० —	,, —	,,
उ० पु० —	,, —	,,

(८) पा (पीने अर्थ में) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	पाहीअ, पाही, पासी—	पाहीअ, पाही, पासी
म० पु० —	,, ,, ,,	,, ,, ,,
उ० पु० —	,, ,, ,,	,, ,, ,,

(९) अस् ("है" "था" अर्थ में) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	आसि अहेसि —	आसि, अहेसि
म० पु० —	,, ,, —	,, ,,
उ० पु० —	,, ,, —	,, ,,

(ग) भविष्यत्काल के प्रत्यय-चिन्ह

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	स्सइ, हिइ —	स्संति, हिइ
म० पु० —	स्ससि, हिसि—	स्सह, हिह, हित्था
उ० पु० —	स्सामि, हामि—	स्सामो, हामो

इन प्रत्ययों का प्रयोग इस प्रकार किया जायगा :—

(१) हो (होने के अर्थ में भू) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
पढमो पुरिसो	— होस्सइ, होहिइ —	होस्संति होहिंति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मज्झिमो पुरिसो — होस्ससि, होहिसि— होस्सह, होहित्था
उत्तिमो पुरिसो — होस्सामि, होहामि—होस्सामो, होहामो

(२) पढ (पढने के अर्थ में पठ्) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— पढिस्सइ, पढिहिइ —	पढिस्संति, पढिहिंति
म० पु०	— पढिस्ससि, पढिहिसि—	पढिस्सह, पढिहित्था
उ० पु०	—पढिस्सामि, पढिहिमि—	पढिस्सामो, पढिहिमो

(३) हस (हँसने के अर्थ में) धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— हसिस्सइ, हसिहिइ —	हसिस्संति, हसिहिंति
म० पु०	— हसिस्ससि, हसिहिसि—	हसिस्सह, हसिहित्था
उ० पु०	— हसिस्सामि, हसिहिमि—	हसिस्सामो, हसिहिमो

(४) गच्छ धातु—

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०—	गच्छिस्सइ गंच्छिहिइ—	गच्छिस्संति गच्छिहिंति
म० पु०—	गच्छिस्ससि,गच्छिहिसि-	गच्छिस्सह,गच्छिहित्था
उ० पु०—	गच्छिस्सामि,गच्छिहिमि-	गच्छिस्सामो,गच्छिहिमो

(५) ण्ह धातु—

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	ण्हास्सइ, ण्हाहिइ —	ण्हास्संति, ण्हाहिंति
म० पु० —	ण्हास्ससि, ण्हाहिसि —	ण्हाहिस्सह, ण्हाहित्था
उ० पु० —	ण्हास्सामि, ण्हाहिमि—	ण्हास्सामो, ण्हाहिमो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६) हण् धातु—

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— हणिस्सइ, हणिहिइ	— हणिस्संति, हणिहिति
म० पु०	— हणिस्ससि, हणिहिसि	— हणिस्सह, हणिहित्था
उ० पु०	— हणिस्सामि, हणिहिमि	— हणिस्सामो, हणिहिमो

(७) कर धातु—

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— करिस्सइ, करिहिइ	— करिस्संति, करिहिति
म० पु०	— करिस्ससि, करिहिसि	— करिस्सह, करिहित्था
उ० पु०	— करिस्सामि, करिहिमि	— करिस्सामो, करिहिमो

(८) पा धातु—

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— पास्सइ, पाहिइ	— पास्संति, पाहिति
म० पु०	—पास्ससि, पाहिसि	— पास्सह, पाहित्था
उ० पु०	—पास्सामि, पाहिमि	— पास्सामो, पाहिमो

(९) अस धातु—

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— अत्थि	— अत्थि
म० पु०	— ,,	,, ,,
उ० पु०	— ,,	,, ,,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(घ) विधि एवं आज्ञार्थक-प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— उ —	न्तु
म० पु०	— सु, हि —	ह
उ० पु०	— मु —	मो

वर्तमान काल के "इ" प्रत्यय को प्रायः "उ" प्रत्यय में बदल देने से इसके रूप बन जाते हैं।

इन प्रत्ययों का प्रयोग निम्न प्रकार किया जायगा :—

(१) हो धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— होउ —	होन्तु
म० पु०	— होसु, होहि —	होह
उ० पु०	होमु —	होमो

(२) पढ धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— पढउ —	पढंतु
म० पु०	— पढसु, पढहि —	पढह
उ० पु०	— पढमु —	पढमो

(३) हस धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	— हसउ —	हसंतु
म० पु०	— हससु, हसहि—	हसह
उ० पु०	— हसिमु —	हसिमो

इसमें विकल्प से एकार भी होता है। अतः हसेउ, हसेंतु आदि रूप भी बनते हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४) गच्छ धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु —	गच्छइ —	गच्छंतु
म० पु० —	गच्छसु —	गच्छह
उ० पु० —	गच्छमु —	गच्छमो

(५) ण्ह धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	ण्हाउ —	ण्हान्तु
म० पु० —	ण्हासु ण्हाहि —	ण्हाह
उ० पु० —	ण्हाम —	ण्हामो

(६) हण् धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	हणउ —	हणंतु
म० पु० —	हणसु, हणहि —	हणह
उ० पु० —	हणमु —	हणमो

(७) कर धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	करउ —	करन्तु
म० पु० —	करसु, करहि —	करह
उ० पु० —	करमु —	करिमो

(८) पा धातु

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु० —	पाउ —	पान्तु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म० पु० — पासु, पाहि — पाह
उ० पु० — पामु — पामो

(९) अस् धातु

इसके धातु रूप भविष्यतकाल के समान होते हैं।

(ङ) क्रियातिपत्ति के प्रत्यय-चिन्ह

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	ज्ज, ज्जा, न्त, माण	ज्ज, ज्जा, न्त, माण
म० पु०	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,
उ० पु०	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,

उक्त प्रत्ययों के प्रयोग सभी वचनों एवं सभी पुरुषों में एक समान चलेंगे। जैसे :

(१) **हो धातु**—होज्ज, होज्जा, होंतो, होमाणो।
(२) **पढ धातु**—पाढेज्ज, पढेज्जा, पढंतो, पढमाणो।
(३) **हस धातु**—हसेज्ज, हसेज्जा, हसंतो, हसमाणो।
(४) **गच्छ धातु** गच्छेज्ज, गच्छेज्जा, गच्छंतो, गच्छमाणो।
(५) **ण्ह धातु**—ण्हेज्ज, ण्हेज्जा, ण्हंतो, ण्हमाणो :
(६) **हण् धातु**—हणेज्ज, हणेज्जा, हणंतो, हणमाणो।
(७) **कर् धातु**—करेज्ज, करेज्जा, करंतो, करमाणो।
(८) **पा धातु**—पाज्ज, पाज्जा, पांतो, पामाणो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राकृत-भाषा एवं काव्य का महत्त्व

पाइयकव्वस्स नमो पाइयकव्वं च निम्मियं जेण ।
ताहं चिय पणमामो पढिऊण य जे वि याणंति ॥१॥

प्राकृत काव्य को नमस्कार, प्राकृत-काव्य की रचना करने वालों को नमस्कार और उन्हें पढ़कर जो उनका गूढार्थ समझ लेते हैं, उन्हें भी नमस्कार ।

गाहाण रसा महिलाण विब्भमा कइजणाण उल्लावा ।
कस्स न हरंति हिययं बालाण य मम्मणुल्लावा ॥२॥

प्राकृत-भाषाओं के रस, महिलाओं के विब्भ्रम (हाव-भाव) कवियों की उक्तियाँ और बालकों की तोतली बोली किसके मन को आकर्षित नहीं करती ?

गाहा रुअइ वराई सिक्खिज्जंति गवारलोएहिं ।
कीरइ लुंचपलुंचा जह गाई मंद दोहेहिं ॥३॥

जब गँवार (अरसिक) जन प्राकृत-काव्य सीखने लगते हैं, तब प्राकृत-गाथा बेचारी रो पड़ती है क्योंकि वे लोग उसे उसी प्रकार नोंच-खरोंच डालते हैं, जिस प्रकार कोई अनाड़ी दुहने वाला गाय के थन को नोंच-खरोंच डालता है ।

सयलाओ इमं वाया विसंति एंतो य णेंति वायाओ ।
एंति समुद्दं चिय णेंति सायराओ चिय जलाइं ॥४॥

सभी भाषाएँ उसी प्रकार इस प्राकृत-भाषा में विलीन हो जाती हैं और इसी प्राकृत-भाषा से निकलती हैं, जिस प्रकार समस्त जल समुद्र में विलीन हो जाता है और समुद्र से ही निकलता है ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

30062 SN:

For Private and Personal Use Only